Toppersnotes®
Unleash the topper in you

बिहार

पुलिस कांस्टेबल

केंद्रीय चयन पर्षद सिपाही भर्ती (CSBC)

भाग - 2

बिहार का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	बिहार का इतिहास	1
2	बिहार की भौगोलिक संरचना	64
3	अपवाह प्रणाली	69
4	बिहार की जलवायु	81
5	मृदा	85
6	प्राकृतिक संसाधन	87
7	कृषि	91
8	बिहार की जनगणना	102
9	राज्यपाल	109
10	राज्य विधानमंडल	115
11	राज्य मंत्रिपरिषद्	126
12	राज्य निकाय	129
13	मुख्यमंत्री	133
14	बिहार उच्च न्यायालय एवं अधीनस्थ न्यायालय	136
15	बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2024–25	143
16	बिहार बजट 2025–26	153

1 CHAPTE

बिहार का इतिहास

- बिहार का इतिहास एवं संस्कृति प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक गौरवशाली एवं वैभवशाली परम्परा की वाहक रही है।
- बिहार की भूमि विभिन्न संस्कृतियों एवं धर्मों के उदय, सम्मिश्रण एवं विकास की परिचायक रही है ।
- सत्य सदाचार और अहिंसा का उपदेश देने वाले भगवान महावीर स्वामी तथा महात्मा बुद्ध ने बिहार की धरती पर ही जन्म लिया।
- चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक महान जैसे दिग्विजयी राजाओं ने इस राज्य को सुदृढ़ता और समुन्नति प्रदान की।

बिहार के इतिहास के स्रोत

बिहार के स्त्रोत

पुरातात्विक स्त्रोत

- पुरापाषण काल (मुंगेर और नालंदा)
- मध्य पाषण काल (हजारीबाग, राँची, सिंहभूम और संथाल परगना)
- नवपाषण काल (सारण में चिरांद और वैशाली में चेचर)
- कुम्हार (पाटन) में अस्सी स्तंभों वाले हॉल के खंडर
- पटना से प्राप्त यक्ष प्रतिमा पर दो अभिलेख
- अशोक के अभिलेख-
  - **स्तम्भलेख**-लौरिया अरेराज लौरिया नंदनगढ़ और रामपुरवा
  - **लघु शिलालेख**-सासाराम की चंदनपीर पहाड़ी से
- अशोक एवं उसके पौत्र दशरथ का बराबर एवं नागार्जुन पहाड़ी से प्राप्त गुफा अभिलेख
- पटना से प्राप्त यक्ष प्रतिमा पर दो अभिलेख
- बसाढ़ से **महादेवी प्रभुदाया** के दो अभिलेख
- गुप्तकाल का ब्राह्मी लिपि में संस्कृत अभिलेख
- बोधगया से प्राप्त एक अभिलेख में श्रीलंका के एक भिक्षु **महामना द्वितीय** का वर्णन
- बसाढ़ से प्राप्त **महादेवी ध्रुवस्वामिनी** की मुहर
- बोधगया से प्राप्त एक अभिलेख में श्रीलंका के एक भिक्षु **महामना द्वितीय** का वर्णन
- नवादा के निकट अफसढ़ गाँव से प्राप्त आदित्य सेन के गुप्तकालीन पाषाण अभिलेख
- बाँका जिले के बौंसी में स्थित मंदार पहाड़ी से आदित्य सेन का अभिलेख
- देव- वरुर्णाक से जीवितगुप्त द्वितीय का पाषाण अभिलेख (आरा)
- धर्मपाल का नालंदा ताम्रपत्र अभिलेख
- देवपाल का मुंगेर ताम्रपत्र अभिलेख

साहित्यिक स्त्रोत

- शतपथ ब्राह्मण गंगा के अलावा उस आर्य सभ्यता को संदर्भित करता हैं।
- अथर्ववेद और पंचविश ब्राह्मण ने प्राचीन बिहार में भटकते तपस्वी को **वर्त्य** कहा था।
- ऋग्वेद में इस क्षेत्र के अछुत लोगों को **किकत** कहा गया हैं।
- पुराण, रामायण और महाभारत
- अभिधम्म पिटक, विनयपिटक, सुत्तपिटक जैसे बोद्ध साहित्य।
- अगुत्तर निकाय ने महाजनपद के बारे में उल्लेख किया हैं।
- दिघ निकाय, दीपवंश और महावंश
- भद्रबहू के कल्पसूत्र, परिशिष्ठ वर्ण और वासुदेवचरित जैसे जैन साहित्य चन्द्रगुप्त मोर्य के प्रारम्भिक इतिहास के बारे में बताते हैं।
- मेगास्थनीज ने चन्द्रगुप्त मोर्य के दरबार में भारत का दौरा किया।
- 5 वीं शताब्दी ई. के दौरान आए फा –फेन मगध के बारे में बात करते हैं।
- ह्वेनसांग 637 ईस्वी में राजा हर्ष के दरबार में आया और नालंदा में महान मठ का उल्लेख किया।
- इत्सिंग एक चीनी यात्री जो नालंदा और उसके पडोसी के बारे में वर्णन करता है।

Unleash the topper in you

प्रमुख तथ्य

- बिहार में पाये गए मौर्य अभिलेखों की भाषा प्राकृत और लिपि ब्राह्मी है।
- **बसाढ़ से प्राप्त एक मुहर**, जो महादेवी ध्रुवस्वामिनी की है, इसमें ध्रुवस्वामिनी को चंद्रगुप्त द्वितीय की पत्नी तथा गोविन्द गुप्त की माँ बताया गया है।
- महामना द्वितीय ने बोधगया में बज्रासन के समीप एक प्रासाद बनवाया था।
- नालंदा से प्राप्त गुप्तकालीन मुहरों से गुप्त वंशावली का वर्णन प्राप्त होता है।
- अफसढ़ से प्राप्त आदित्य सेन के गुप्तकालीन पाषाण अभिलेख में उत्तर गुप्तकालीन वंश के संस्थापक कृष्ण गुप्त से लेकर आदित्य सेन तक के इतिहास की जानकारी मिलती है।
- जीवितगुप्त द्वितीय के पाषाण अभिलेख में उत्तर गुप्त शासकों की वंशावली है।
- पाल शासकों के अभिलेख दक्षिण एवं मध्य बिहार के कई स्थानों से प्राप्त हुए हैं, जो संस्कृत भाषा में है।
- धर्मपाल के बोधगया से प्राप्त पाषाण अभिलेख में केशव नामक व्यक्ति का उल्लेख है, जिसने बोधगया में एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया था।
  - धर्मपाल के नालंदा ताम्रपत्र अभिलेख से गया में एक गाँव दान देने का साक्ष्य मिलता है।
- देवपाल के **सरावा पाषाण अभिलेख** में नगरहारा (अफगानिस्तान) के वीरदेव को नालंदा विश्वविद्यालय का अध्यक्ष नियुक्त करने की चर्चा है।
- महिपाल के **नालंदा पाषाण लेख** अनुसार बालादित्य ने नालंदा महाविहार को जला दिया था।
- अजातशत्रु द्वारा निर्मित राजगीर की किलेबंद दीवार एवं बराबर की गुफाओं का अध्ययन **बुकानन और हैमिल्टन** द्वारा किया गया है।
- केसरिया स्तूप और अरेराज स्तम्भ की जानकारी होटगाँव ने पहली बार दी थी।
- बराबर की पहाड़ी में अशोक एवं उसके पौत्र दशरथ के द्वारा निर्मित गुफा का वर्णन मेजर किट्टो ने किया है तथा इसने ही कुर्कीहार (कुम्हरार) के टीले का उत्खनन करवाया था।
- **भारतीय पुरातत्व विज्ञान के जनक अलेग्जेंडर कनिंघम** ने 1861 ई. में बिहार के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों की पहचान की।
- कनिंघम ने ही बोधगया में स्थित बोधि मंदिर के बारे में बताया एवं ग्रेनाइट निर्मित रेलिंग की खोज की।
  - कनिंघम ने राजगीर से 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बड़गाँव की खोज की, जहाँ प्राचीन नालंदा महाविहार स्थित है। वहाँ से दो अभिलेख भी मिले हैं, जिन पर नालंदा का नाम उत्कीर्ण है।
  - नालंदा क्षेत्र से ही कुमारगुप्त एवं स्कंदगुप्त का प्रसिद्ध पाषाण लेख मिला है।
- स्वतंत्रता के बाद **1949 ई.** में पटना विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग की स्थापना की गई।
- के. देव एवं डॉ. अल्तेकर ने **1950 ई.** में वैशाली और **1951 ई.** में कुम्हरार का उत्खनन करवाया था।
- **1962 ई.** में राज्य पुरातत्व निदेशालय की स्थापना की गई।
- सिक्कों का अध्ययन **मुद्राशास्त्र (Numismatics**) कहलाता है। आरंभिक सिक्कों को **'आहत सिक्के**' कहा गया है।
- वृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार विदेह के राजा जनक ने निष्क (सुवर्ण/ शतमान) सिक्के दान में दिए थे।
- बौद्धकालीन जातक कथाओं में **'निष्क' को 'स्वर्ण सिक्का'** कहा गया है लेकिन बिहार के किसी भी भाग में प्राचीन स्वर्ण सिक्के प्राप्त नहीं हुए हैं।
- बिहार से प्राप्त प्राचीन सिक्के मूलतः आहत सिक्के ही हैं. जिन्हें कार्षापण, धारण या पूर्ण और पर्ण जैसे अनेक नामों से जाना जाता है।
- बिहार में चाँदी और ताम्र सिक्के अनेक भागों से एन.बी.पी. (उत्तरी काले चित्रित) स्थलों से प्राप्त हुए हैं।
- **'रजत आहत सिक्के'** लोहानीपुर, कुम्हरार मनेर, मायागंज, राजगीर, बोधगया, नालंदा, वैशाली, फतुहा भभुआ, सुपौल, मोतिहारी, नंदनगढ़, मुंगेर, पटना सिटी, गया, चिराँद तथा बक्सर से प्राप्त हुए हैं।
- नालंदा में प्रतिहार राजा भोज के सिक्के मिले हैं।
- शशांक के स्वर्ण सिक्के नालंदा और गया से मिले हैं।

बिहार में प्रागैतिहासिक काल

- बिहार में मेसोलिथिक मानव निवास के प्रमाण हैं।
- प्रागैतिहासिक शैल चित्रों की खोज बिहार के कैमूर, नवादा और जमुई क्षेत्र से हुई।
  - वे उस समय के लोगों की जीवन शैली को दर्शाते हैं।
  - मानव गतिविधियों जैसे नाचना, शिकार करना, घूमना आदि के बारे में जानकारी देना।
  - वे मध्य और दक्षिणी भारत और यूरोप और अफ्रीका में पाए गए चित्रों के समान हैं।
    - स्पेन के अल्ता मीरा और फ्रांस के लास्कॉक्स के रॉक पेंटिंग बिहार से खोजे गए चित्रों के साथ कुछ सामान्य विशेषताएँ साझा करते हैं।
- आदिमानव के निवास का साक्ष्य बिहार के कुछ स्थानों से लगभग एक लाख वर्ष पूर्व का मिला हैं।
- यह साक्ष्य पुरापाषाण युग का है। इसमें पत्थर के उपकरण पाये गए हैं। ऐसे अवशेष नालंदा और मुंगेर जिलों में उत्खनन से प्राप्त हुए हैं।
- प्राक् ऐतिहासिक काल का प्रारंभिक चरण पाषाण युग कहलाता है। इस समय मानव ने पत्थर के उपकरणों के आधार पर अपनी संस्कृति का निर्माण किया।

- पत्थर के उपकरणों में विविधता एवं विशेषताओं में परिवर्तन के आधार पर पाषाण युग का विभाजन-
  - पुरापाषाण युग,
  - मध्यपाषाण युग,
  - नवपाषाण युग
- बिहार के नालंदा, गया, मुंगेर और भागलपुर जिलों में निम्न, मध्य और उच्च पुरापाषाण काल के पाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- ये उपकरण नालंदा की जेठियन घाटी, गया की पेमार घाटी, मुंगेर के भीमबाँध और पैसरा, भागलपुर के राजपोखर एवं भालीजोर तथा पश्चिमी चम्पारण के वाल्मीकि नगर से प्राप्त हुए हैं।
- इन स्थानों से प्राप्त पाषाण उपकरण आशुलियन प्रकार के हैं।
- इन उपकरणों में कुल्हाड़ी, अस्क, स्क्रेपर (क्षुरणक). फलक, झुड़िया, अर्द्ध चान्द्रिक, उत्कीर्णक छुरी तथा खुरचनी आदि प्रमुख है।
- इन उपकरणों का प्रयोग जानवरों का शिकार करने एवं उनका चमड़ा उतारने के लिए किया जाता था।
- इस समय मानव की जीविका का प्रमुख स्रोत शिकार एवं मछली पकड़ना तथा कंद-मूल एकत्रित करना था।
- इस समय मानव घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करता था तथा प्राकृतिक आवास **जैसे-** पहाड़ी चट्टानों एवं गुफाओं में रहता था।
- गया जिले की शेरघाटी में प्रागैतिहासिक मानव के दो चट्टानी आवास के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- मेसोलिथिक निवास के साक्ष्य - पैसरा (मुंगेर) ।

बिहार में नवपाषाणकालीन साक्ष्य

- नवपाषाण काल, जिसमें मनुष्य द्वारा कृषि कार्य प्रारंभ किए जाने के कारण मानव जीवन की प्रथम क्रांति का काल कहते हैं।
- कृषि कार्य के कारण इस काल में स्थायी बस्तियों का विकास शुरू हुआ।
- कृषि प्रारंभ होने के कारण मानव गुफाओं से निकलकर मैदानी क्षेत्रों में निवास करने लगा।
- बिहार में नवपाषाण काल के प्रमुख स्थल वैशाली के चेचर (श्वेतपुर) एवं कुतुबपुर, सारण के चिरौंद, पटना के मनेर, रोहतास के सेनुआर गया के सोनपुर, ताराडीह एवं केऊर है।
- नवपाषाणकालीन बस्ती के साक्ष्य: बिहार के चिरांद क्षेत्र में खोजे गए।

चिरान्द

- सारण के चिराँद से नवपाषाण कालीन अस्थि उपकरण प्राप्त हुए हैं चिरौंद छपरा से 11 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में गंगा नदी के तट पर स्थित है।
- ऐसा माना जाता है कि चिराँद का नामकरण चेरो शासक के नाम पर हुआ है।
- चिराँद का उत्खनन 1962 ई. में हुआ।
- यह बिहार के सारण जिले में एक पुरातात्विक स्थल है।
- **स्थान** - गंगा नदी का उत्तरी तट।
- इसका एक बड़ा प्रागैतिहासिक टीला है।
  - नवपाषाण युग (लगभग 2500-1345 ईसा पूर्व) से पाल वंश, जिन्होंने पूर्व-मध्य काल के दौरान शासन किया था, के शासनकाल तक अपने निरंतर पुरातात्विक रिकॉर्ड के लिए जाना जाता है।
- यहाँ से नवपाषाण कालीन अस्थि उपकरण के साथ-साथ काले चित्रित मृद्भांड भी प्राप्त हुए हैं।
- उत्खनन से स्तरीकृत नवपाषाण, ताम्रपाषाण और लौह युग की बस्तियों और 2500 ईसा पूर्व से 30 ईस्वी तक के मानव निवास पैटर्न के साक्ष्य मिले।
- चिरांद नवपाषाण समूह ने मैदानी इलाकों पर कब्जा कर लिया, जबकि उनके समकालीन लोग पठारों और पहाड़ियों पर बसे हुए थे।
- यहाँ व्यावसायिक वर्गीकरण में तीन अवधियाँ शामिल हैं -
  - अवधि I नवपाषाण (2500-1345 ईसा पूर्व)।
  - अवधि II ताम्रपाषाण काल (1600 ई.पू.) ।
  - अवधि III लौह युग।
- नवपाषाण काल की शीर्ष परत की कार्बन डेटिंग 1910 ईसा पूर्व और 1600 ईसा पूर्व के बीच की है।
  - खोजा गया निम्नतम स्तर 200 ईसा पूर्व का है।
- **अर्थव्यवस्था**
  - इसमें शिकार,संग्रहण, मछली पकड़ना और पशु पालन करना शामिल था।
  - कुछ बर्तनों में मिले धान की भूसी के साक्ष्यों से चावल और अनाज जैसे गेंहूँ, मूँग, मसूर और जौ की खेती में शामिल होने के बारे में जानकारी मिलती हैं।
  - कृषि और जंगली चावल दोनों की कटाई गर्मियों के दौरान और फिर से सर्दियों के दौरान की जाती थी।

प्रमुख निष्कर्ष

- पुरातात्विक खोज 3.5 मीटर (11 फीट) मोटाई के एक नवपाषाण निक्षेप, 5.5 मीटर (18 फीट) मोटी एक ताम्रपाषाण परत और 2.45 मीटर (8 फीट 0 इंच) मोटाई के लौह युग के निक्षेपों से की गई हैं।
- **मृद्भांड**

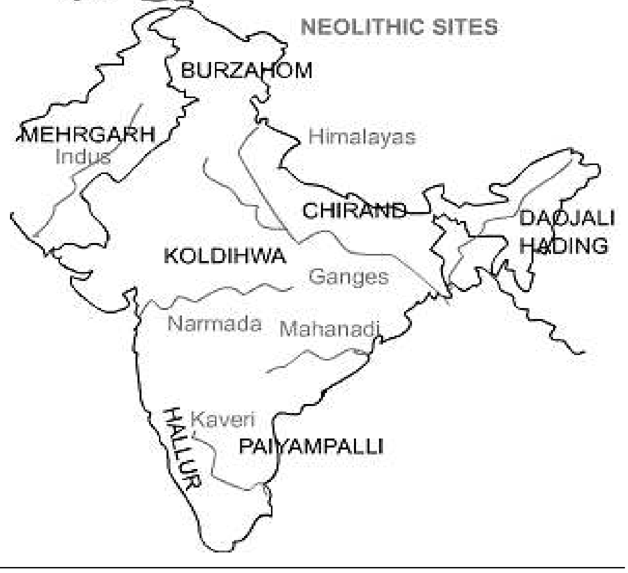

- चिरांद से उत्खनित 25,000 बर्तनों को अवधि II के नवपाषाण मिट्टी के बर्तनों के अनुसार वर्गीकृत किया गया है, जो अवधि 1 के मिट्टी के बर्तनों की तुलना में अधिक परिष्कृत दिखाई देते हैं, सभी अभ्रक के साथ मिश्रित चिकनी मिट्टी से बने है।
  - अधिकांश मिट्टी के बर्तन हाथ से बनाए जाते थे।
  - कुछ बर्तन टर्न टेबल या डबिंग द्वारा बनाए गए थे।
  - आधे बर्तन लाल बर्तन हैं और आधे काले और लाल बर्तन हैं।
- **औजार**
  - सेल्ट के नवपाषाणकालीन पत्थर के औजार पाए गए।
  - प्राप्त की गई कुल्हाड़ियाँ क्वार्टजाइट, बेसाल्ट और ग्रेनाइट से बनी थी।
  - खोज में नौ प्रकार के माइक्रोलिथ प्राप्त हुए।
  - प्राप्त किए गए वेस्ट फ्लेक्स, क्षेत्र में एक अच्छी तरह से स्थापित माइक्रोलिथिक उद्योग में निर्माण की प्रक्रिया के प्रसार को इंगित करते हैं जिसमें सोन नदी के सूखे तल से प्राप्त चर्ट, कैल्सेडनी, एगेट और जैस्पर का उपयोग शामिल हैं।
  - लंबे, बेलनाकार और त्रिकोणीय आकार में पत्थर की डिस्क की खोज की गई थी।

सामाजिक जीवन

- नवपाषाण काल के लोग वृत्ताकार लकड़ी और मिट्टी और बाँस से बनी झोपड़ियों में रहते थे।
- एक अर्धवृत्ताकार झोपड़ी में चूल्हे और तिरछे आकार के तंदूर पाए गए।
- चूल्हे और तंदूर के चारों ओर मिट्टी के सफेद रंग से तंदूर में भुने हुए जानवरों के माँस के साक्ष्य मिलते हैं।
- चावल मुख्य भोजन था।
- घरों चारदीवारी मिट्टी की थी।
- जले हुए निशान वाली मिट्टी के टुकड़ों, ईख या बांस से पता चलता है कि घर आग से नष्ट हो गए थे।

ताम्रपाषाण युग

- मानव ने पहली बार धातु के रूप में ताँबे का प्रयोग करना प्रारंभ किया। ताँबे का प्रयोग पत्थर के साथ किया गया। इसलिए इस युग को 'ताम्रपाषाण युग' कहा जाता है।
- ताम्रपाषाण संस्कृति में भी मनुष्य का जीवन कृषि एवं आखेट पर ही आधारित था।
- नवपाषाण काल का अंत - लोगों ने धातुओं का उपयोग करना शुरू कर दिया।
- सर्वप्रथम प्रयुक्त धातु - ताँबा।

ताँबा + निम्न-श्रेणी का कांस्य + पत्थर के औजार = ताम्रपाषाण काल/पत्थर-ताँबा चरण

- सामाजिक असमानताओं के साथ-साथ ग्रामीण समुदाय के उद्भव के साक्ष्य मिले।

विशेषताएँ

- पूर्व-हड़प्पा चरण, हालाँकि, हड़प्पा चरण के बाद देश के कुछ हिस्सों में ताम्रपाषाण संस्कृति देखी गई।
- मुख्य आहार - मछली और चावल।
- पकी ईंटों का उपयोग नहीं किया जाता था।
- मकान- मिट्टी और घांस-फूंस से बने और गोलाकार या आयताकार घर।
- सोने का उपयोग केवल अलंकरण के उद्देश्यों के लिए।
- कपास का उत्पादन दक्कन क्षेत्र में होता था।
- लोग बुनाई, कताई और ताँबा गलाने का कार्य करते थे।
- ताम्रपाषाण बस्तियों के साक्ष्य -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान।
  - पश्चिमी मध्य प्रदेश।
  - पश्चिमी महाराष्ट्र।
  - दक्षिण और पूर्वी भारत
- पत्थरों से बने छोटे औजारों और हथियारों का प्रयोग- पत्थर के ब्लेड और ब्लेडलेट।
- काले और लाल मृदभांडों (BRW) का उपयोग।

बिहार में ताम्रपाषाण स्थल

- बिहार में ताम्रपाषाण संस्कृति का प्रमाण सोनपुर, ताराडीह, मनेर, सेनुआर, चिराँद, चेचर, नरहन तथा आश्यिप से प्राप्त हुआ है।
- 1050 ई.पू. के आस-पास गंगा घाटी में अतरंजीखेड़ा (उत्तर प्रदेश) से लोहा मिलने का प्रमाण मिलता है।
- चिरांद
  - घर - गोलाकार घर।
  - कृषि - चावल+ मछली पकड़ने के काँटे

मुख्य निष्कर्ष

- प्रागैतिहासिक शैल चित्रों की खोज बिहार के कैमूर, नवादा और जमुई क्षेत्र से हुई।
- मध्यपाषाण निवास - पैसरा (मुंगेर)।
- चिरांद से बिहार में नवपाषाणकालीन साक्ष्य
  - नवपाषाण युग से पाल वंश के शासनकाल तक अपने निरंतर पुरातात्विक रिकॉर्ड के लिए जाना जाता है।
- **बिहार में ताम्रपाषाण स्थल**
  - नरहनी
  - चिरान्द
    - बंदोबस्त - पोस्ट-होल और गोल घर।
    - कृषि - चाँवल + मछली हुक

लौह युग

- लोहे के आविष्कार के कारण ताम्रपाषाण संस्कृति का स्थान लौह युग ने ले लिया।
- 1050 ई.पू. के आस-पास गंगा घाटी में अतरंजीखेड़ा (उत्तर प्रदेश) से लोहा मिलने का प्रमाण मिलता है।

Unleash the topper in you

- लौह काल-लौह युग उत्तर वैदिक युग का काल है, जिसमें मानवीय बस्तियों का विस्तार गंगा घाटी में उत्तरी बिहार तक हो चुका था।
- इस समय लोहे का प्रयोग मुख्य रूप से औजार निर्माण में किया जाता था।
- लौह युग का दूसरा चरण, जो उत्तरी काले मृद्भांड (N.B.P.) का काल कहलाता है, में लोहे का उपयोग कृषि कार्य में भी होने लगा।
- इस समय गाँव धीरे-धीरे नगर में परिवर्तित होने लगे, जिससे पहली बार बिहार में नगरीकरण का साक्ष्य प्राप्त होता है।

ऐतिहासिक काल

- यह काल उत्तर वैदिक काल माना जाता है। बिहार में आर्यीकरण इसी काल से प्रारम्भ हुआ।
- लोहे का प्रयोग होने से मानव की संस्कृति में व्यापक परिवर्तन आया और नई भौतिक संस्कृति का विकास प्रारंभ हुआ।
- बिहार का प्राचीनतम वर्णन अथर्ववेद (10वीं - 8वीं शताब्दी ई. पू.) एवं पंचविश ब्राह्मण (8वीं-6वीं शताब्दी ई. पू.) में मिलता है।
- इन ग्रन्थों में बिहार के लिए **'ब्रात्य'** शब्द का उल्लेख है।
- मान्यता है कि अथर्ववेद की रचना के समय में ही आर्यों ने बिहार के क्षेत्र में प्रवेश किया।
- **800 ई. पू.** रचित शतपथ ब्राह्मण में गांगेय घाटी के क्षेत्र में आर्यों द्वारा जंगलों को जलाकर और काटकर साफ करने की जानकारी मिलती है।
- ऋग्वेद में बिहार को **'कीकट'** कहा गया है। ऋग्वेद में कीकट क्षेत्र के अमित्र शासक प्रेमगन्द की चर्चा आती है, जबकि आर्यों के सांस्कृतिक वर्चस्व का प्रारंभ ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना के समय हुआ।
- उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) में वैदिक संस्कृति का विस्तार पूर्वी भारत में उत्तर बिहार तक हुआ।
- **'शतपथ ब्राह्मण'** सबसे प्राचीन एवं सबसे बड़ा ब्राह्मण ग्रंथ है, जिसके रचयिता याज्ञवल्क्य हैं, इसमें आर्यों के विस्तार की चर्चा है।
- शतपथ ब्राह्मण, पंचविश ब्राह्मण, गौपथ ब्राह्मण, ऐतरेय आरण्यक, कौशितकी आरण्यक, सांख्यायन आरण्यक, वाजसनेयी संहिता, महाभारत इत्यादि में वर्णित घटनाओं से उत्तर वैदिककालीन बिहार की जानकारी मिलती है।
- **'शतपथ ब्राह्मण'** के अनुसार आर्यों ने सर्वप्रथम उत्तर-पश्चिम भारत में प्रवेश किया।
- सरस्वती नदी उनका केन्द्र थी, जिसके तट पर बड़े-बड़े यज्ञ एवं कर्मकाण्ड का आयोजन किया जाता था।
- 'शतपथ ब्राह्मण' में **माधव विदेह एवं गौतम राहुगण** की कहानी है, जिसके अनुसार माधव विदेह ने ही आर्य संस्कृति का विस्तार उत्तर बिहार तक किया था।
- उत्तर वैदिक काल के मध्य चरण तक आते-आते आर्यों का विस्तार बिहार के **मगध, अंग, वज्जि, विदेह अंगुत्तरप्प, कौशिकी क्षेत्रों** तक हो चुका था।
- बिहार के सन्दर्भ में बेहतर जानकारी पुराण, रामायण तथा महाभारत में भी मिलती है।
- ग्रन्थों के उपलब्ध प्रमाणों के अनुसार आर्यों ने मगध क्षेत्र में बसने के बाद अंग क्षेत्र में भी आर्यों की संस्कृति का विस्तार किया।
- वाराह पुराण के अनुसार कीकट को एक अपवित्र प्रदेश कहा गया है,
- जबकि वायु पुराण, पद्म पुराण में गया, राजगीर, पनपन आदि को पवित्र स्थानों की श्रेणी में रखा गया है।
- वायु पुराण में गया क्षेत्र को "असुरों का राज" कहा गया है।
- आर्यों के मिथिला विदेह क्षेत्र में विस्तार एवं बसने का प्रमाण 'शतपथ ब्राह्मण' से मिलता है।
- राजा विदेह माधव एवं उनके पुरोहित गौतम राहुगण सरस्वती नदी के तट से अग्नि को जलाते हुए पूर्वी भारत की ओर बढ़े तथा बिहार के विदेह क्षेत्र में गंडक नदी तक पहुँचे।
- गंडक नदी में अग्नि बुझ गई, जिसके कारण गंडक को 'सदानीरा' भी कहा जाता है। इस क्रम में अग्नि ने सरस्वती नदी से सदा मीरा नदी तक जंगल को काट डाला जिससे बने खाली क्षेत्र में आर्यों को बसने में सहायता मिली।
- उत्तर वैदिक युग के अंतिम चरण में विदेह की चर्चा उपनिषदों की रचना के कारण हुई है।
- विदेह के राजा जनक दार्शनिक एवं विद्वान राजा थे, जिन्होंने उपनिषदों की रचना करवाई थी।
- 'वृहदारण्यक उपनिषद्' में विद्वान याज्ञवल्क्य - गार्गी एवं याज्ञवल्क्य - मैत्रेयी संवाद का वर्णन है ।
- विदेह के राजा जनक के दरबार में याज्ञवल्क्य एवं उनकी पत्नी मैत्रेयी रहती थी।
- वाल्मीकि रामायण में मलद और करुणा शब्द का उल्लेख बक्सर के लिए किया गया है जहाँ ताड़िकाक्षसी का वध हुआ था।
- गंगा घाटी में पूर्व की ओर आर्यों के प्रसार का एक महत्वपूर्ण कारण लौह तकनीकी का विकास था और इस क्षेत्र में लौह उपकरण अधिक मात्रा में उपलब्ध हुए थे।
- लोहे के कारण कृषि के क्षेत्र में भी विकास हुआ, जिसके कारण प्राचीन बिहार में भी नगरीकरण प्रारंभ हुआ।

प्राचीन बिहार में सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन

- उत्तर वैदिक काल में कृषि क्षेत्र में लोहे का प्रयोग होने से उत्पादन में वृद्धि हुई, जिसके कारण सामाजिक-आर्थिक जीवन में जटिलता आने लगी ।
- कृषि क्षेत्र के विस्तार होने से पशुओं की मांग बढ़ने लगी, जबकि उत्तर वैदिक काल में हो रहे बड़े-बड़े यज्ञों में पशुबलि दी जाती थी।
- ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) के अंतिम चरण में अर्थात् 1000 ई.पू. आते-आते सामाजिक जीवन में कई प्रकार की कुरीतियाँ आने लगी।
- 'ऋग्वेद' के 10वें मंडल के पुरुष सूक्त में पहली बार वर्ण व्यवस्था का उल्लेख हुआ है, जो उत्तर वैदिक काल का अंत होते-होते अपने जटिल स्वरूप में आ गई।

- छठी सदी पूर्व तक छुआछूत जैसे कुरीतियाँ कठोर रूप ग्रहण कर चुकी थी।
- ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी, जो उत्तर वैदिक काल के अंतिम चरण में आते-आते दयनीय हो गई थी।
- उत्तर वैदिक काल के अंतिम चरण में (छठी सदी ई.पू.) सामाजिक जटिलता, कर्मकाण्ड, छुआछूत, अस्पृश्यता आदि के विरोध में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन हुआ।
- **इस आंदोलन के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-**

1. वर्ण व्यवस्था की जटिलता एवं तनावपूर्ण सामाजिक जीवन ।
2. धार्मिक जीवन से असंतोष ।
3. नये धार्मिक विचारों का उदय ।
4. नई अर्थव्यवस्था का प्रभाव।

- इस समय वैदिक धर्म के खिलाफ अनेक नास्तिक एवं अनीश्वरवादी संप्रदाय का उदय हुआ।
- केवल उत्तर भारत में लगभग 62 संप्रदाय का उदय हुआ, जिसमें **बौद्ध संप्रदाय एवं जैन संप्रदाय** प्रमुख थे।
- इन दोनों संप्रदायों की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि बिहार ही रही है।

बौद्ध संप्रदाय

- **बौद्ध धर्म के संस्थापक-** गौतम बुद्ध (563 ई. पू-483 ई. पू.)
- **गौतम बुद्ध के बचपन का नाम**- सिद्धार्थ
- **गोत्र का नाम**- गौतम
- **जन्म-** कपिलवस्तु (वर्तमान पिपरहवा) के लुम्बिनी गाँव के आम्रकुंज में
- **कुल**- कपिलवस्तु के शाक्य कुल
- **पिता-** शाक्य कुल के क्षत्रिय राजा शुद्धोधन
- **माता-** कोलीय कुल की कौशल की राजकुमारी महामाया देवी (बुद्ध के जन्म के एक सप्ताह बाद माता महामाया देवी की मृत्यु)
- **पालन-पोषण**- मौसी एवं सौतेली माँ प्रजापति गौतमी
- **विवाह**- 16 वर्ष की अवस्था में शाक्य गण की राजकुमारी यशोधरा(अन्य नाम बिम्बा, गोपा, भद्रकच्छा आदि)
- **पुत्र**- राहुल

बिहार में बुद्ध से सम्बंधित घटनाक्रम

- बुद्ध ने कपिलवस्तु भ्रमण के क्रम में क्रमशः **चार चिन्ह वृद्ध व्यक्ति, रोगी, मृत और संन्यासी** को देखा।
  - बौद्ध साहित्य **'दीघ निकाय'** के अनुसार गौतम बुद्ध को चारों चिन्ह एक ही यात्रा में दिखाई दिए,
  - लेकिन अन्य स्रोतों के अनुसार अलग-अलग यात्रा में दिखाई दिए थे।
  - संन्यासी को देखकर सांसारिक जीवन के प्रति गौतम बुद्ध का मोहभंग हो गया और उन्होंने गृहस्थ जीवन त्यागने का निर्णय लिया।
- 29 वर्ष की अवस्था में उन्होंने रात्रि के समय में गृहत्याग किया, जिसे 'महाभिनिष्क्रमण' कहते हैं।
  - बुद्ध ने अनुविन नामक स्थान पर अनोमा नदी के किनारे **प्रवज्ञा (वस्त्र त्याग)** धारण किया।
- बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम दो प्रारंभिक गुरु पहले **वैशाली में अलार कलाम एवं उनके शिष्य मरण्डु कलाम,** जो सांख्य दर्शन के विद्वान थे तथा बाद में **राजगृह में रूद्रक रामपुत्र** मिले।
  - इन दोनों की शिक्षाओं से गौतम बुद्ध संतुष्ट नहीं हुए और गया के पास उरुवेला (बोधगया) वन पहुँचे ।
- उरुवेला वन में पाँच साथियों के साथ कठिन तपस्या प्रारंभ की। इन साथियों में कौण्डिन्य, अज, अस्सिग, वप्प और भदिय थे।
- 35 वर्ष की अवस्था में पीपल वृक्ष के नीचे सुजाता नामक कन्या के हाथ से तपस्या के 49वें दिन खीर खाने के बाद बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई, तब बुद्ध बोधिसत्व कहलाए।
- ज्ञान प्राप्ति की घटना को बौद्ध धर्म में 'निर्वाण' कहा जाता है।
- बुद्ध ने सर्वप्रथम तपस और भल्लिक नामक दो बंजारों को बोधगया में ही अपना शिष्य बनाया।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध सारनाथ (ऋषिपतनम) के मृगदाव पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपने पाँच साथियों को प्रथम उपदेश दिया। यह प्रथम उपदेश 'धर्म चक्र परिवर्तन' कहलाता है।
- सारनाथ में ही बुद्ध ने बौद्ध संघ की स्थापना की।
- इसके बाद बुद्ध वाराणसी पहुँचकर यश नामक श्रेष्ठिपुत्र के घर पर रुके यश अपने माता-पिता, पत्नी के साथ महात्मा बुद्ध का अनुयायी बन गया। यश की माता और पत्नी महात्मा बुद्ध की प्रथम उपासिकाएं बनीं।
- वाराणसी से उरुवेला जाने के क्रम में बुद्ध से 30 धनी युवकों की मुलाकात हुई, जिनका नेता भद्र था तथा ये सभी भद्रवर्गीय थे। ये सभी लोग बुद्ध के अनुयायी बन गये ।
- उरुवेला से बुद्ध राजगृह पहुँचे, जहाँ बिम्बसार ने उन्हें वेणुवन विहार दान में दिया।
- राजगृह में ही सारिपुत्र, मोद्गलायन, उपालि आदि इनके शिष्य बने।
- राजगृह से बुद्ध लुम्बिनी पहुँचे, जहाँ उन्होंने स्त्रियों को बौद्ध संघ में शामिल किया।
- माता प्रजापति गौतमी बौद्ध संघ में शामिल होने वाली प्रथम स्त्री थी।
- अपने शिष्य आनन्द के कहने पर ही बुद्ध ने स्त्रियों को बौद्ध धर्म में शामिल किया था।
- स्त्रियों को शामिल करते हुए बुद्ध ने कहा था कि जो बौद्ध धर्म हजार वर्ष तक चलता, वह अब पाँच सौ वर्ष में ही समाप्त हो जाएगा।
- लुम्बिनी में उनका चचेरा भाई देवदत्त भी शिष्य बना।
- ज्ञान प्राप्ति के आठवें वर्ष बुद्ध वैशाली पहुँचे, जहाँ लिच्छवियों ने उन्हें कुटाग्रशाला नामक विहार दान में दिया था।
- वैशाली में वैशाली की नगर वधू आम्रपाली गौतम बुद्ध की शिष्या बनी। मगध के शासक बिम्बिसार की पत्नी क्षेमा बुद्ध की शिष्या बनी थी ।

- ज्ञान प्राप्ति के 20वें वर्ष बुद्ध कोशल की राजधानी श्रावस्ती पहुँचे, जहाँ अँगुलीमाल नामक डाकू बुद्ध का शिष्य बना। बुद्ध ने अपने जीवन में सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये।
- 80 वर्ष की अवस्था में 483 ई.पू. में दक्षिणी मल्ल की राजधानी पावा में चुन्द नामक सुनार के घर सूअर का माँस (सूकर माँस) खाने से उदर विकार हुआ, जिससे बुद्ध की मृत्यु हो गई। मृत्यु की घटना को 'महापरिनिर्वाण' कहते हैं। बुद्ध की मृत्यु के समय आनन्द ने बुद्ध से पूछा कि आपके बाद हमारे शास्ता (मार्गदर्शक) कौन होंगे? इस पर बुद्ध ने कहा कि मेरे बाद मेरे उपदेश ही तुम्हारा शास्ता होंगे।
- **बुद्ध का अंतिम वाक्य था-' अप्प दीपो भव'।**
- बौद्ध साहित्य 'महापरिनिर्वाण सूत्र' के अनुसार बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अस्थि अवशेष को प्राप्त करने के लिए आठ शासक पहुँचे थे।
- अतः उनके अस्थि अवशेषों को आठ भागों में विभाजित कर दिया गया। इन आठों भागों पर स्तूपों का निर्माण करवाया गया।

बिहार में महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल

बोधगया

- यहां गौतम बुद्ध को पीपल के पेड़ के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इस पेड़ को 'बोधी वृक्ष' कहा जाता है।
- यह स्थान निरंजना नदी के तट पर बसा है और उस समय इसे उरुवेला के नाम से जाना जाता था।
- वर्ष 2002 में, यूनेस्को (UNESCO) ने महाबोधी मंदिर (बोध गया) को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया था।

परागबोधी

- यहां बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त करने से पहले मनुष्यों की पीड़ा का कारण जानने और कष्ट एवं पीड़ा से जीवन को मुक्त करने के लिए संन्यास लिया था।
- 'परागबोधी' का अर्थ है ' ज्ञान प्राप्ति से पहले' और यह स्थान प्रतीकात्मक रूप से बिल्कुल कल्पना के जैसा ही है।
- यह फल्गु नदी के तट पर बोधगया से तीन मील उत्तर– पूर्व में पहाड़ी की चोटी पर स्थित है।

बराबर की गुफाएं

- यह भारत में मौजूद सबसे पुराने शैलकृत गुफ़ाओं में से एक है जिसे करीब 322–185 ई.पू. में बनाया गया था।
- यह बिहार के जहाँनाबाद जिले के मखदुमपुर प्रखंड के बराबर और नागार्जुनी नाम की जुड़वां पहाड़ियों पर स्थित है।
- मौर्य काल के दौरान बनाई गईं इन गुफाओं में बड़े बौद्ध चैत्य हैं।
- इनमें स्तूपों के प्रतीक, खुदाई कर बनाई गई हाथी की तस्वीरें, गोलाकार गुंबदनुमा कक्ष के साथ घुमावदार नक्काशी वाले आयताकार मंडप भी हैं।

चंपानगर

- भागलपुर जिले में स्थित
- यह स्थान भगवान बुद्ध के महत्वपूर्ण प्रवचनों और उपदेशों के लिए जाना जाता है।
- इनमें कंद्रका सुत्त, सोनदंदा सुत्त आदि भी शामिल हैं।
- गग्गरा का कमल झील न सिर्फ बौद्धों बल्कि अन्य पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है क्योंकि यह झील यहां उगने वाले खूबसूरत कमल के फूलों के लिए प्रसिद्ध है।

दोन स्तूप

- सिवान जिले में अवस्थित
- एक लोक कथा है कि बुद्ध के परिनिर्वाण और दाह संस्कार के बाद हुए विवाद के कारण बुद्ध के चार शिष्यों में उनके नश्वर अस्थियों को विभाजित किया गया था।
- स्तूप पवित्र पात्र के लिए प्रसिद्ध है जो अब घास के टीले में बदल गया है।
- इस टीले पर एक हिन्दू मंदिर बना हुआ है जिसमें देवी तारा की पूजा की जाती है।
- दोन स्तूप की यात्रा चीनी यात्री ह्वेनत्सांग ने भी किया था और भारत में उनकी यात्रा के विवरण में इसका उल्लेख किया गया है।

घोसरवां

- यह बिहार राज्य के बिहार शरीफ शहर के पास स्थित है।
- यह स्थान भगवान बुद्ध की 10 फील लंबी चमकदार काले पत्थर की मूर्ति की वजह से प्रसिद्ध है ।
- तेतरवां जो इस स्थान से सिर्फ कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, बौद्ध पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है क्योंकि यहां भगवान बुद्ध और बोधित्सव की मूर्तियों का अद्भुत संग्रह देखने को मिलता है।

गुरपा पहाडी

- यह बोध गया से सिर्फ 40 किमी दूर है।
- एक किंवदंती के अनुसार यह वह स्थान है जहां महाकाश्यप (बुद्ध के उत्तराधिकारी) ने मैत्रेयी का इंतजार किया था।
- **बौद्ध धर्मग्रंथों के अनुसार** "मैत्रेयी सबसे पहले कुक्कुतपदागिरी गईं और फिर महाकाश्यप को पहाड़ से नीचे ले कर आईं। फिर उनके लिए बुद्ध के कपड़े लाईं और फिर अपनी यात्रा प्रारंभ की।"

हाजीपुर

- आधुनिक हाजीपुर का प्राचीन नाम उच्चकला था। यह पटना के पास है।
- यह महत्वपूर्ण बैद्ध स्थलों में से एक है और भगवान बुद्ध के सबसे करीबी शिष्य आनंद के पार्थिव शरीर के लिए प्रख्यात है।
- बौद्ध धर्म में इस स्थान का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि भगवान बुद्ध ने स्वयं यहां पर कूला गोपालका सुत्त का प्रवचन दिया था।

इंदासला की गुफाएं

- यह बिहार के राजगीर जिले में स्थित है।
- यह स्थान अपने धार्मिक महत्व की वजह से जाना जाता है। क्योंकि यही वह स्थान है जहां भगवान बुद्ध ने सक्का द्वारा पूछे गए आठ प्रश्नों का उत्तर सक्का पन्हा सुत्त प्रवचन के माध्यम से दिया था।

जेथियन

- यह वह स्थान है जहां राजा बिम्बिसार ने अपनी पत्नी के साथ भगवान बुद्ध से मुलाकात की थी।
- सूपतिथ्था सेतिया पर बने स्तूप के अवशेषों को देखने के लिए बौद्ध पर्यटक यहां आते हैं।

केसरिया स्तूप

- यह बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में है।
- केस्सापुत्ता इस स्थान का प्राचीन नाम है क्योंकि इस स्थान पर बुद्ध ने स्थानीय कलमा लोगों के लिए प्रसिद्ध कलमा सुत्त प्रवचन दिया था।
- भगवान बुद्ध के अंतिम दिनों और जाति एवं धर्म से परे लोगों उनकी मानवीय दृष्टिकोण को दर्शाता छह मंजिली संरचना वाला यह स्तूप दुनिया का सबसे बड़ा स्तूप है।

नालंदा विश्वविद्यालय

- यह सबसे बड़ा बौद्ध मठ है।
- यह पहला भारतीय आवासीय विश्वविद्यालय था जिसकी स्थापना गुप्त वंश के शासक 'कुमार गुप्त' ने किया था।
- चीनी तीर्थयात्री ह्वेनत्सांग के साहित्यिक कार्यों से इस विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी मिलती है।
- तुर्की के आक्रमणकारी बख्यितार खिलजी ने इसे 1193 ई. में बर्बाद कर दिया था।
- वर्ष 1960-69 के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीन पटना विश्वविद्यालय के बी.पी. सिंह ने इसकी खुदाई कराई थी।

राजगीर

- हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म का यह महत्वपूर्ण धर्मस्थल है।
- राजगीर का शाब्दिक अर्थ है 'राजाओं का निवास'।
- मगध साम्राज्य की यह पहली प्राचीन राजधानी थी लेकिन उदियन के आने के बाद पाटलिपुत्र को मगध की राजधानी बना दिया गया था।
- यह शहर हर्यक वंश के राजाओं बिम्बिसार और अजातशत्रु से संबद्ध है।
- शांति स्तूप, गृद्धकूट पर्वत, प्राचीन खंडहर और सप्तपर्णी गुफाएं न सिर्फ बौद्ध पर्यटकों बल्कि अन्य पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र हैं।
- बौद्ध भिक्षु महाकाश्यप के साथ अजातशत्रु के संरक्षण में यहां पहला बौद्ध परिषद आयोजित किया गया था जिसमें बौद्ध धर्म के नियमों और भगवान बुद्ध की शिक्षा (सुत्त) को संरक्षित करने का फैसला किया गया था।

वैशाली

- यह दुनिया के पहले गणराज्य लिच्छवी की राजधानी थी
- यह गणराज्य छठी सदी ई.पू. के आसपास महाजनपद के विज्जियन महासंघ (वृज्जि) का हिस्सा था।
- अशोक स्तंभ, विशाल किला, संग्रहालय और बावन पोखर मंदिर आकर्षक का केंद्र हैं।
- इस शहर में भगवान बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश दिया था और अपने संभावित महापरिनिर्वाण की घोषणा की थी।
- दूसरा बौद्ध परिषद, सबाकामी की अध्यक्षता में राजा कालसोक के संरक्षण में यहीं पर आयोजित किया गया था।
- यात्रावृतांतों में चीनी खोजकर्ता फाहियान और ह्वेन त्सांग द्वारा इस शहर का उल्लेख मिलता है।
- इसका प्रयोग आगे चलकर 1861 में अंग्रेज पुरातत्वविद् अलेक्जेंडर कनिंघम ने किया और बिहार के वैशाली जिले में वर्तमान बसरा गांव के साथ सबसे पहली बार वैशाली की पहचान की।

कुर्किहार

- इस स्थान पर बौद्ध विहारों के अवशेष है जो अब टिलों में बदल चुके हैं।
- खुदाई के बाद यहां से बुद्ध की कांसे से बनी 148 बेहतरीन कलाकृतियां, बोधित्सव, घंटियां, स्तूप और अनुष्ठान में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तएं प्राप्त हुईं हैं।

लौरिया नंदनगढ़

- यह स्थान राजा अशोक द्वारा बनवाए गए 26 मीटर के विशाल स्तूप के लिए प्रसिद्ध है।
- इस स्तूप में भगवान गौतम बुद्ध की अस्थियां संजो कर रखी गईं हैं।

पाटलिपुत्र

- इसकी स्थापना मगध शासक अजातशत्रु ने ई.पू. 490 में गंगा नदी के तट पर एक छोटे किले (पाटलिग्राम) के तौर पर की थी।
- यह शहर हर्यक वंश, मौर्य साम्राज्य, शुंग साम्राज्य, गुप्त साम्राज्य और शेरशाह के साम्राज्य से जुड़ा हुआ है।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय (भागलपुर)

- बिहार के भागलपुर जिले में स्थित है और एक मात्र ऐसा बौद्ध स्थान है जहां बुद्ध कभी नहीं गए।
- 8वीं सदी ई.पू. के दौरान राजा धर्मपाल के शासन काल में यह तांत्रिक बौद्ध धर्म के अध्ययन केंद्र के रूप में विकसित हुआ।

विश्व शांति स्तूप

- बिहार के वैशाली जिले में स्थित
- भगवान बुद्ध को समर्पित इस स्तूप का निर्माण जापानी वास्तुकला में किया गया है
- विश्व शांति स्तूप सफेद संगमरमर से बना खूबसूरत स्मारक है

जैन धर्म

- जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' से बना है, जिसका अर्थ विजेता है।
- विजय प्राप्त करने वाले व्यक्ति को जैन धर्म में **'वीतराग'** कहा गया है।
- जैन धर्म एक प्राचीन धर्म है, जिनके प्रवर्तकों को **'तीर्थंकर'** कहा जाता है।
- जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए हैं।
- प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) थे, जिन्हें जैन धर्म का संस्थापक कहा जाता है।

- 24 तीर्थंकरों में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ एवं 24वें तथा अंतिम तीर्थंकर महावीर की ऐतिहासिकता प्रमाणित है।
- इनके पहले के 22 तीर्थंकरों का ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध नहीं है।

पार्श्वनाथ

- ये काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे।
- 30 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृहत्याग किया था।
- 83 दिन की तपस्या के बाद इन्हें संबेत पर्वत पर ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
- उन्होंने वैदिक कर्मकांड और बहुदेववाद की आलोचना की।
- इनके अनुयायी 'निग्रंथी' कहलाते थे।
- निग्रंथी का अर्थ है बंधन से मुक्त होना।
- इनके प्रमुख शिष्य **केशी** थे।
- **इन्होंने चार मूल शिक्षा दी, जो निम्नलिखित हैं-**
  1. सत्य
  2. अहिंसा
  3. अस्तेय (चोरी नहीं करना)
  4. अपरिग्रह (धन जमा नहीं करना)

24वें तीर्थंकर महावीर (540 ई.पू. - 468 ई.पू.)

- **जन्म-** वैशाली के कुंडग्राम में
- **माता-** त्रिशला (विदेहदत्ता) लिच्छवी के राजा चेटक की बहन
- **पिता-** सिद्धार्थ (ज्ञातृक कुल के क्षत्रिय)
- (महावीर के माता-पिता पार्श्वनाथ के शिष्य थे।)
- **बचपन का नाम-** वर्द्धमान
- **विवाह-** कुण्डियन गोत्र की यशोदा से
- **पुत्री-** प्रियदर्शना (विवाह- जमालि के साथ हुआ)
- **मृत्यु-** 72 वर्ष की अवस्था में पावापुरी में
- **प्रथम शिष्य-** जामालि
- **प्रथम उपदेश-** राजगृह में

बिहार में महावीर से सम्बंधित घटनाक्रम

- पिता की मृत्यु के बाद बड़े भाई नन्दीवर्द्धन की आज्ञा से 30 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृहत्याग किया था।
- गृहत्याग के 13 माह बाद उन्होंने वस्त्र त्याग दिए ।
- 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद 42 वर्ष की अवस्था में ऋजुपालिका नदी के तट पर **जृम्भिक ग्राम में साल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान की प्राप्ति** हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर 'कैवल्य' कहलाए।
  - **कैवल्य का अर्थ-** सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करने वाला ।
- इनके अनुयायी 'जैनी' कहलाते हैं तथा इनका प्रमुख शिष्य इन्द्रभूति गौतम था।
- ज्ञान प्राप्ति के बाद महावीर ने अपना प्रथम उपदेश राजगृह में दिया था।
- इन्होने **मूल शिक्षा में पांचवीं शिक्षा ब्रह्मचर्य** को शामिल किया।
- इनके समकालीन शासकों में बिम्बिसार, अजातशत्रु उदयन, प्रद्योत सेन आदि इनके अनुयायी थे।

बिहार में महत्वपूर्ण जैन स्थल

पावापुरी जैन मंदिर

- बिहार के नालंदा जिले में स्थित पावापुरी जैन मंदिर राज्य के सबसे प्रमुख जैन तीर्थों में से एक है।
- यह मंदिर जैन धर्म के 24वें और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर को समर्पित है।
- जैन परंपरा के अनुसार, भगवान महावीर ने इसी स्थान पर मोक्ष (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) प्राप्त की थी।

राजगीर जैन मंदिर

- बिहार के नालंदा जिले के राजगीर शहर में स्थित राजगीर जैन मंदिर, राज्य का एक और महत्वपूर्ण जैन तीर्थ है।
- यह मंदिर भगवान महावीर को समर्पित है और माना जाता है कि यह वह स्थान है जहाँ उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना पहला उपदेश दिया था।

कुंडलपुर जैन मंदिर

- बिहार के नालंदा जिले में स्थित कुंडलपुर जैन मंदिर, राज्य का एक और महत्वपूर्ण जैन तीर्थ है।
- यह मंदिर जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ को समर्पित है।
- जैन परंपरा के अनुसार, भगवान नेमिनाथ ने इसी स्थान पर मोक्ष प्राप्त किया था।
- कुंडलपुर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मस्थान माना जाता है।

जल मंदिर जैन मंदिर

- बिहार के नालंदा जिले के पावापुरी में स्थित जल मंदिर जैन मंदिर, राज्य का एक अनूठा जैन तीर्थ है।
- यह मंदिर एक तालाब के बीच में स्थित है और भगवान महावीर को समर्पित है।
- जैन परंपरा के अनुसार, भगवान महावीर ने अपने अंतिम दिन इसी स्थान पर बिताए थे।

सोन भंडार जैन मंदिर

- बिहार के नालंदा जिले के राजगीर शहर में स्थित सोन भंडार जैन मंदिर, राज्य का एक और महत्वपूर्ण जैन तीर्थ है।
- माना जाता है कि यह मंदिर मौर्य काल का है और जैन धर्म के 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य को समर्पित है।

लाच्वागढ़ (लच्छवार):

- लाच्वागढ़ भगवान महावीर के जीवन का एक और महत्वपूर्ण स्थल है।
- कहा जाता है कि यहाँ उन्होंने कई वर्षों तक तपस्या की थी।
- यहाँ भगवान महावीर की तपस्या स्थली के रूप में एक प्राचीन जैन मंदिर है।
- स्थान का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व है।

चंपापुर (भागलपुर):

- चंपापुर को भगवान महावीर के पाँच प्रमुख कैलाश पर्वतों में से एक माना जाता है।
- यह स्थान उनकी तपस्या और उपदेश के लिए प्रसिद्ध है।
- यहाँ पर भगवान महावीर के स्मारक के रूप में एक जैन मंदिर स्थित है।

वैशाली

- वैशाली में भगवान महावीर का जन्म हुआ था।

- वे वैशाली के कुंडलपुर (वर्तमान में बसाड़) नामक गाँव में लिच्छवी कुल के राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के घर जन्मे थे।
- यह स्थान जैन धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यंत पवित्र माना जाता है।
- वैशाली में अशोक स्तंभ भी है
- कुंडलपुर में एक जैन मंदिर भी है जो भगवान महावीर के जन्मस्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है

नालंदा
- वैशाली के निकट स्थित
- नालंदा भगवान महावीर के उपदेश स्थल के रूप में जाना जाता है।
- यहाँ उन्होंने विभिन्न समुदायों को अपने उपदेश दिए और जैन धर्म का प्रचार किया।
- नालंदा में कई जैन स्थलों के साथ-साथ पुरातात्विक अवशेष भी पाए जाते हैं, जो इस क्षेत्र की धार्मिक महत्ता को दर्शाते हैं।

मनियार मठ:
- राजगीर, नालंदा जिला
- यह मठ प्राचीन जैन धर्म से संबंधित है
- माना जाता है कि यहाँ भगवान महावीर ने कई चातुर्मास बिताए थे।
- मठ के आस-पास खुदाई में कई जैन प्रतिमाएँ और अन्य अवशेष मिले हैं।

बिहार का महाजनपद काल - 600 ई.पू

- भारत का राजनैतिक इतिहास का निर्धारण सर्वप्रथम पॉर्जिटर द्वारा करने का प्रयास किया गया है।
- ऋग्वैदिक काल में प्रजा आश्रित 'जन' शब्द का प्रयोग राजनीतिक इकाई के रूप में मिलता है।
- उत्तरवैदिक काल में क्षेत्र आश्रित जनपद शब्द का प्रयोग होने लगा।
- **600 ई.पू.** के आसपास कई जनपदों के मिलने से महाजनपद का निर्माण हुआ।
- बौद्धकाल में 16 महाजनपदों का विवरण मिलता है।
- 16 महाजनपदों की प्रथम जानकारी बौद्ध साहित्य **'अंगुत्तर निकाय'** और जैन साहित्य **'भगवती सूत्र'** से मिलती है।
- इन 16 महाजनपदों में 3 महाजनपद **मगध, अंग एवं वज्जि** बिहार में स्थित हैं।

अंग
- इसका उल्लेख सर्वप्रथम **'अथर्ववेद'** में मिलता है,
- **राजधानी-** वर्तमान भागलपुर निकट चंपा में थी।
- पाणिनी रचित **'अष्टाध्यायी'** में अंग को वंग, कलिंग तथा पुण्ड्र आदि भी कहा गया है।
- अंग महाजनपद बिहार के पूर्वी भाग से लेकर बंगाल की खाड़ी तक फैला था।
- इस महाजनपद के अंतर्गत **मानभूम,वीरभूम,मुर्शिदाबाद और संथाल परगना** के क्षेत्र भी सम्मिलित थे।
- महाभारत एवं पुराणों के अनुसार राजा बलि के 6 पुत्रों में से एक पुत्र ने अंग महाजनपद की स्थापना की ।
- इन्ही स्रोतों के अनुसार **पृथुलाक्ष के पुत्र चंप के नाम पर चंपा नगर की स्थापना हुई,** जो बाद में अंग की राजधानी बनी।
- अंग के शासक **ब्रह्मदत** ने जब मगध के शासक बिंबिसार के पिता भत्ति को पराजित किया, तब बिंबिसार ने क्रोधित होकर अंग पर आक्रमण कर दिया और छोटानागपुर क्षेत्र के शासक नागराज की सहायता से ब्रह्मदत की हत्या कर दी।
- अंग पर अधिकार करने के बाद बिंबिसार ने एक ब्राह्मण **शेणदण्ड** को चंपा का जागीरदार नियुक्त किया।
- इस तरह **ब्रह्मदत अंग महाजनपद का अंतिम शासक** था।
- मगध के शासक **अजातशत्रु के समय अंग को पूरी तरह से मगध में मिला लिया गया।**
- 16 महाजनपदों में 5 महाजनपद अपनी भौगोलिक एवं आर्थिक स्थिति के कारण शक्तिशाली होकर उभरे।

वज्जि
- इसकी स्थापना लगभग **725 ई. पूर्व** के आसपास हुई थी।
- यह **आठ राज्यों का एक संघ** था।
- इस संघ में शामिल राज्य थे- **लिच्छवी, विदेह ज्ञातक, वज्जि उग्र, भोग, कौरव एवं इक्ष्वाकु** ।
- इसमें लिच्छवी की राजधानी वैशाली विदेह की मिथिला, ज्ञातक की कुण्डग्राम तथा वज्जि की कोल्लाग आदि थी।
- सम्पूर्ण वज्जि संघ की राजधानी वैशाली थी।
- इन आठ राज्यों में लिच्छवी सर्वाधिक प्रसिद्ध राज्य था। अतः वज्जि संघ को लिच्छवी संघ भी कहा जाता है।
- वैशाली में गणतांत्रिक व्यवस्था स्थापित थी, इसलिए इसे विश्व का प्रथम गणतंत्र भी कहा जाता है।
- वैशाली का नामकरण राजा विशाल नाम पर हुआ था।
- मगध के शासक बिंबिसार ने लिच्छवी के राजा चेटक की पुत्री चेल्लना के साथ विवाह किया था, जिसके कारण मगध और लिच्छवी संघ में बिंबिसार के समय मित्रता स्थापित हुई।

- लेकिन बिंबिसार के पुत्र अजातशत्रु के समय अजातशत्रु के विरुद्ध वज्जियों ने मल्लों एवं कोसल के गणराज्यों के साथ मिलकर एक महासंघ का निर्माण किया था।
- इस महासंघ में लिच्छवी के 9 गणराज्य, मल्ल के 9 गणराज्य तथा काशी एवं कोसल के 18 गणराज्य शामिल हुए थे।
- बौद्ध विद्वान बुद्धघोष के अनुसार वज्जियों ने शासन व्यवस्था को चलाने के लिए एक संविधान का निर्माण किया था, जिसके तहत राजा का चुनाव होता था।
- वज्जि संघ के शासन को चलाने के लिए 7707 राजा होते थे। राजा के साथ-साथ उप राजा, सेनापति एवं भंडारगारी का भी चुनाव होता था।
- लिच्छवी संघ की सभा का आयोजन संथागार नामक भवन में होता था।
- लिच्छवी राजाओं की सभा **'संस्था'** कहलाती थी, जो गणराज्य की सर्वोच्च सभा थी।
- संस्था के अतिरिक्त **अष्टकुल** नामक एक संस्था थी, जिसमें वज्जि संघ के सभी 8 गणराज्यों का प्रतिनिधि होता था, जो न्याय महासमिति का कार्य करता था।
- ग्राम एवं नगर प्रशासन की देख-रेख के लिए **ग्रामिणी एवं पूर्णगामिक** की नियुक्ति होती थी ।
- **ग्रामिणी गाँव का मुखिया** होता था, **पूर्णगामिक औद्योगिक उत्पादन इकाइयों का प्रधान** था।
- गौतम बुद्ध ने वज्जियों की गणतांत्रिक व्यवस्था के बारे में कहा था कि जब तक वज्जि संघ के लोग अपने सात आवश्यक धम्मों का पालन करते रहेंगे, उन्हें कोई पराजित नहीं कर सकता है।
- वज्जि संघ की बैठकों की अध्यक्षता गणप्रमुख करता था तथा बैठकों में गणपूर्ति अनिवार्य थी।
- गणपूर्ति की संख्या 20 निर्धारित थी। वज्जि संघ में कोई भी निर्णय मतदान के आधार पर किया जाता था।
- मतपत्र प्रत्येक सदस्य को दिया जाता था, जो लकड़ी का बना होता था एवं अलग-अलग रंगों का होता था।
- बिम्बिसार, उदयिन, प्रद्योतसेन और प्रसेनजित चारों छठी शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध में हुए ये सभी बुद्ध एवं महावीर के समकालीन थे।
- इन पाँचों के बीच आपसी वर्चस्व के लिए संघर्ष हुआ, जिसमें अंततः मगध विजयी हुआ।

मगध साम्राज्य का उदय

- मगध शब्द का प्रथम उल्लेख 'अथर्ववेद' में मिलता है।
- मगध क्षेत्र वर्तमान बिहार के गंगा का दक्षिणी भाग है, जिसमें मूलरूप से पटना, गया, नालंदा नवादा, औरंगाबाद का क्षेत्र स्थित है।
- मगध साम्राज्य का केन्द्र बिन्दु राजगृह एवं पाटलिपुत्र था।
- अपनी भौगोलिक स्थिति एवं आर्थिक संसाधनों की सम्पन्नता के कारण अन्य महाजनपदों पर मगध श्रेष्ठता स्थापित करने में सफल रहा।

मगध साम्राज्य के उत्कर्ष के कारण -

- **भौगोलिक स्थिति-**
  - मगध की राजधानी चारों ओर से पहाड़ियों से घिरी थी, अतः यह बाह्य आक्रमण से सुरक्षित था।
  - मगध से गंगा और सोन नदियाँ गुजरती थी. जिससे जल यातायात की सुविधा थी।
  - गंगा की दक्षिणी घाटी अधिक उपजाऊ थी, जो कृषि के लिए उत्तम थी।
- **खनिज पदार्थों की उपलब्धता-**
  - मगध के दक्षिणी भाग में लोहा, तांबा तथा वन संसाधन प्रचुर मात्रा में पाये जाते थे।
  - लोहे की उपलब्धता के कारण उत्तम हथियार बनाने में सहायता मिली तथा कृषि उत्पादकता में तीव्र वृद्धि हुई।
- **अन्य गणराज्यों का पतन-**
  - मगध क्षेत्र में बौद्ध एवं जैन धर्म का उदय हुआ, जिसका समर्थन इस क्षेत्र के शासकों ने किया।
  - शासकों द्वारा बौद्ध एवं जैन धर्म के समर्थन के कारण उस क्षेत्र की जनता द्वारा शासकों को बड़े पैमाने पर सहयोग प्रदान किया गया।

वृहद्रथ वंश

- मगध का प्रथम ऐतिहासिक वंश हर्यक वंश है, जिसके नेतृत्व में मगध साम्राज्य का उदय हुआ, लेकिन पौराणिक स्रोत के अनुसार मगध का प्रथम वंश वृहद्रथ वंश था। इस वंश का संस्थापक वृहद्रथ था।
- इसके पिता का नाम चेदिराज वस्सु था। इसकी राजधानी **वसुमति या गिरिव्रज या कुशाग्रपुर** थी।
- इस वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध **राजा जरासंध** हुआ।
- महाभारत में जरासंध एवं भीम के बीच मल्ल युद्ध का वर्णन मिलता है।
- एक मान्यता के अनुसार राजगृह की चट्टानों में इस युद्ध के पदचिन्ह आज भी दिखाई देते हैं।
- इसने काशी, कोशल, चेदि, मालवा, विदेह अंग, कलिंग, कश्मीर और गांधार के राजाओं को भी पराजित किया। जरासंध की मृत्यु के बाद उसका पुत्र सहदेव शासक बना।
- वृहद्रथ वंश का अंतिम शासक रिपुंजय था। जिसकी हत्या उसके **मंत्री पुलक** ने कर दी और अपने पुत्र को राजा बना दिया।
  - बाद में एक दरबारी महीय ने पुलक और उसके पुत्र को मार कर अपने पुत्र बिम्बिसार को गद्दी पर बैठाया।

हर्यक वंश

- मगध एवं बिहार शब्द का प्रथम उल्लेख अथर्ववेद में हुआ है।
- भारत का प्रथम साम्राज्य मगध साम्राज्य को माना जाता है, जिसका संस्थापक हर्यक वंश का **बिम्बिसार या श्रेणिक** है।
- **बिम्बिसार (544-592 ई. पू.)-**
  - बौद्ध ग्रंथ महावंश के अनुसार हर्यक वंश का संस्थापक बिम्बिसार 15 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा तथा इसके नेतृत्व में ही मगध साम्राज्य का विस्तार आरंभ हुआ।

- इसने अपनी राजधानी राजगृह को बनाया तथा लगभग 52 वर्षों तक शासन किया।
- राजगृह का वास्तुकार **महागोविंद** था।

- **अजातशत्रु (493 ई.पू. -461 ई. पू.)-**
  - अजातशत्रु अपने पिता बिम्बिसार की भांति साम्राज्यवादी प्रकृति का शासक था।
  - वह जैन धर्म का अनुयायी था।
  - उसका उपनाम कुणिक भी था।
  - उसके शासन काल में तीन महत्वपूर्ण विद्रोह हुए, जिसके परिणाम अजातशत्रु के पक्ष में रहे।
  - कोशल के साथ संघर्ष बिम्बिसार की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी कोशल देवी की भी मृत्यु दुःख के कारण हो गई, जिससे प्रसेनजित ने क्रोधित होकर मगध को दिये गए काशी के अनेक गाँवों पर पुनः अधिकार कर लिया।
  - काशी को लेकर अजातशत्रु और कोशल के शासक प्रसेनजित के बीच युद्ध हुआ, जिसमें प्रसेनजित पराजित हुआ और उसने भागकर श्रावस्ती में शरण ली।
    - दूसरी बार युद्ध में अजातशत्रु पराजित हुआ, लेकिन प्रसेनजित की पुत्री वाजिरा के साथ अजातशत्रु ने विवाह कर संघर्ष को समाप्त किया।
    - अजातशत्रु के शासनकाल में ही कोशल को अंतिम रूप से मगध में मिला लिया गया।
  - **वज्जि संघ के साथ संघर्ष-**
    - कोशल विजय के बाद अजातशत्रु ने अपने **मंत्री वस्सकार** के सहयोग से वज्जि संघ में फूट डाल दी।
    - उसके बाद 16 वर्षीय युद्ध में इसने वैशाली को अपने राज्य में मिला लिया।
    - इस युद्ध में अजातशत्रु ने कंटक शिला एवं रथमूसल जैसे यंत्रों का प्रयोग किया।
    - वज्जि से युद्ध करने लिए गंगा, गंडक और सोन नदियों के संगम पर अजातशत्रु ने एक सैनिक छावनी का निर्माण किया, जो बाद में पाटलिपुत्र के नाम से जाना गया।
  - **मल्लों के साथ संघर्ष -**
    - लिच्छवियों को पराजित करने के बाद अजातशत्रु ने मल्ल संघ पर आक्रमण कर उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया।
    - वैवाहिक संबंध के द्वारा अजातशत्रु ने वत्स को अपना मित्र बना लिया।
    - अजातशत्रु ने अपने शासन के प्रथम 10 वर्षों में गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् उनके अवशेषों पर राजगृह में स्तूप का निर्माण करवाया।
    - अजातशत्रु से वैशाली की नगरवधू आम्रपाली प्रेम करती थी।
    - इसके शासन काल में ही राजगृह की सप्तपर्णी गुफा में महाकश्यप की अध्यक्षता में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया था।
    - अजातशत्रु के पुत्र उदायिन ने उसकी हत्या कर दी और स्वयं मगध साम्राज्य का शासक बना।
  - अवन्ति नरेश प्रद्योत के द्वारा आक्रमण किए जाने की आशंका को ध्यान में रखकर अजातशत्रु ने राजगृह में सुरक्षा दुर्ग बनवाया, जो भारत में स्थापत्य निर्माण का प्राचीनतम उदाहरण है।

- **उदायिन (461-444 ई.पू.)**
  - उदायिन अपने पिता अजातशत्रु के शासन काल में चंपा का राज्यपाल था।
  - इसने गंगा और सोन नदी के संगम पर पाटलिपुत्र नगर को बसाया तथा मगध की राजधानी राजगृह से हटाकर पाटलिपुत्र में स्थापित की।
  - उदायिन जैन धर्म का अनुयायी था।
  - उसने पाटलिपुत्र के मध्य में एक जैन चैत्यगृह का निर्माण करवाया था।
  - अवन्ति के राजा पालक ने उदायिन की हत्या करा दी।
  - काशी के अमात्य शिशुनाग ने हर्यक वंश के अंतिम शासक नागदाशक की हत्या कर शिशुनाग वंश की स्थापना की।
  - नागदशक को पुराणों में 'दर्शक' भी कहा गया है।

शिशुनाग वंश (412-345 ई.पू.)

- काशी का राज्यपाल शिशुनाग 412 ई. पू. में मगध का राजा बना।
- इसने मगध की राजधानी पाटलिपुत्र से वैशाली स्थानांतरित की।
- शिशुनाग ने वत्स, अवन्ति, कौशाम्बी पर विजय प्राप्त की।
- 394 ई. पू. में शिशुनाग की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र कालाशोक (काकवर्ण) मगध की गद्दी पर बैठा।
- इसने पाटलिपुत्र को पुनः मगध की राजधानी बनाया।
- शिशुनाग वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक कालाशोक हुआ।
- इसके शासन काल में ही वैशाली में बौद्ध धर्म की 'द्वितीय संगीति का आयोजन 383 ई. पू. में हुआ।
- नन्दीवर्धन शिशुनाग वंश का अंतिम शासक था।

नंद वंश (345-321 ई. पू.)

- महापद्म नंद ने शिशुनाग वंश का अंत कर मगध साम्राज्य पर अधिकार किया तथा नंद वंश की स्थापना की।
- नंद वंश के समय मगध की शक्ति चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
- इस वंश के अधीन नंद एवं उसके आठ पुत्रों ने शासन किया।
- इस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक महापद्म नंद एवं घनानंद थे।
- महापद्म नंद को 'कलि का अंश', 'सर्वक्षत्रांतक', 'दूसरे परशुराम का अवतार', 'भार्गव', 'एकराट' आदि कहा गया है। भारतीय इतिहास में पहली बार महापद्म नंद ने मगध जैसे एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जिसकी सीमाएँ गंगा घाटी के मैदानों का अतिक्रमण कर गई।

- विन्ध्यपर्वत के दक्षिण में विजय पताका फहराने वाला पहला मगध का शासक महापद्म नंद ही हुआ।
- महापद्म नंद ने उड़ीसा को जीता तथा वहां नहर बनवाई थी।
- इस विशाल साम्राज्य में एकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था की स्थापना की गई।
- नंद शासक जैन धर्म को मानते थे तथा शुद्र जाति से संबंधित थे। वह उड़ीसा से जैन मूर्ति को उठाकर मगध लाया था।
- महापद्म नंद के बाद मगध का अंतिम शासक घनानंद हुआ, जिसके समय में 326 ई. पू. में यूनानी शासक सिकन्दर ई.पू. का भारत पर आक्रमण हुआ।
- 322 ई.पू. में चंद्रगुप्त मौर्य ने घनानंद को पराजित कर नंदवंश को समाप्त किया।

मौर्य काल (321-184 ई.पू.)

- **मौर्य वंश की राजधानी** -पाटलिपुत्र
  - मौर्य वंश के स्रोत
    - **गुफा अभिलेख -** गया (बिहार) के उत्तर में बराबर और नागार्जुन पहाड़ियों में स्थित है।
- **कला और वास्तुकला**
  - **महल -** पाटलिपुत्र में मौर्यों की राजधानी, कुम्रहार में अशोक का महल।
  - **स्तंभ**
    - **अशोक के 7 स्तंभ शिलालेख**
      - ✓ प्राप्ति स्थल टोपरा (दिल्ली), मेरठ, कौशाम्बी, रामपुरवा, चंपारण, महरौली।
    - **प्रमुख स्तंभ लेख**
      - ✓ लौरिया-नंदनगढ़- चंपारण, बिहार।
      - ✓ लौरिया-अरेराज - चंपारण, बिहार
  - **स्तूप**
    - मौर्य काल के दौरान बुद्ध की मृत्यु के बाद निर्मित स्तूप: राजगृह, वैशाली और पिप्पलीवन।
  - **गुफाएँ**
    - बिहार के जहानाबाद जिले के मखदुमपुर क्षेत्र में सात गुफाएँ (सतगरवा)।
    - बराबर गुफाएँ (4 गुफाएँ)

<u>बराबर गुफाएँ</u>

- भारत में मौर्यकालीन रॉक-कट वास्तुकला का सबसे पुराना उदाहरण हैं।
- बिहार के जहानाबाद जिले में बराबर पहाड़ियों में स्थित है।
- बराबर में 4 गुफाएँ अशोक (273-232 ईसा पूर्व) और उनके पोते दशरथ के शासनकाल की हैं।
  - **लोमस ऋषि गुफा**
    - सबसे लोकप्रिय बराबर गुफा।
    - प्रवेश द्वार के ऊपर सजावटी मेहराब में उस समय की लकड़ी की वास्तुकला का अनुकरण मिलता है।
    - बाद के चैत्यों में अपनाया गया - चैत्य मेहराब के रूप में जानी जाती है।
    - बाद के मंदिरों में सजावटी रूपांकन के रूप में थी।
    - एक तिजोरी वाला कमरा है।
  - **सुदामा गुफा**
    - धनुष के आकार के मेहराबों के लिए जाना जाता है और इसमें अशोक के अभिलेख हैं।
    - पत्थर में दर्शाए गए लकड़ी के ढाँचे के साथ गोलाकार गुंबददार मंदिर हैं।
  - **कर्ण चौपार**
    - पॉलिश की गई सतहों के साथ एक आयताकार कमरे में मौर्य युग के अभिलेख हैं।
  - **विश्व झोपड़ी**
    - 2 आयताकार गुफाएँ हैं।
    - बिहार में नागार्जुनी गुफाएँ (3 गुफाएँ) दशरथ के समय में बनी थीं।

  - **मृदभांड –** कौशाम्बी और पाटलिपुत्र उत्तरी काला पॉलिश मृदभांड (NBPW) के केंद्र थे।
  - **मूर्तियाँ**
    - पटना के लोहानीपुर में नग्न पुरुष आकृति का धड़ मिला।
    - दीदारगंज यक्षिणी पटना के दीदारगंज गांव में मिली थी।

मौर्य वंश- राजनीतिक संदर्भ

- मगध के सिंहासन पर नंद वंश के अंतिम सम्राट घनानंद का नाश करके चंद्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
- इस वंश में चंद्रगुप्त मौर्य तथा अशोक सर्वाधिक शक्तिशाली शासक हुए।

चंद्रगुप्त मौर्य

- मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य था। इसके जन्म और जाति के बारे में विद्वानों में मतभेद है।
- ब्राह्मण ग्रंथ, विष्णु पुराण तथा मुद्राराक्षस के अनुसार चंद्रगुप्त मौर्य शूद्र था, जबकि स्पूनर के अनुसार वह पारसीक था।
- जैन एवं बौद्ध ग्रंथ इसे **क्षत्रिय तथा मोरिय क्षत्रिय** वंश से संबंधित मानते थे।
- चंद्रगुप्त मौर्य को सैन्ड्रोकोट्स, एन्ड्रोकोट्स, सैन्ड्रोकोट्टस आदि नामों से भी जाना जाता है।
- कौटिल्य की सहायता से चंद्रगुप्त मौर्य ने सर्वप्रथम उत्तर-पश्चिम के राज्य पंजाब एवं सिंध को विजित किया।
- इसके बाद चंद्रगुप्त मौर्य ने मगध साम्राज्य पर विजय प्राप्त की। सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् सेल्यूकस बेबीलोन का राजा बना।
- भारत विजय को ध्यान में रखते हुए वह काबुल के मार्ग से होते हुए सिन्धु नदी की ओर बढ़ा, जहाँ उसका सामना चंद्रगुप्त मौर्य की सेना से हुआ। इस युद्ध में सेल्यूकस पराजित हुआ, तथा उसने 303 ई. पू. में चंद्रगुप्त मौर्य से सन्धि की।

- सेल्यूकस ने अपनी पुत्री हेलेना का विवाह चंद्रगुप्त मौर्य से किया तथा दहेज के रूप में उसने हेरात, कंधार, मकरान तट, काबुल चंद्रगुप्त मौर्य को दिया। इसके बदले में चंद्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस को 500 हाथी उपहार स्वरूप प्रदान किये।
- सेल्यूकस ने मेगास्थनीज नामक एक राजदूत चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में भेजा, जिसने **'इंडिका'** नामक पुस्तिका की रचना की।
- चंद्रगुप्त मौर्य को **भारत का मुक्तिदाता** कहा जाता है।
- शासन के अंतिम वर्ष में चंद्रगुप्त मौर्य अपना सिंहासन त्याग कर भद्रबाहु के साथ श्रवणबेलगोला (मैसूर) में चंद्रगिरी पर्वत पर तपस्या करने चला गया, जहाँ उसने संलेखना विधि द्वारा अपनी प्राण त्याग दिये।

बिंदुसार (298-273 ई. पू.)

- चंद्रगुप्त मौर्य के मृत्यु के बाद उसका पुत्र बिंदुसार 298 ई.पू. में मगध साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। यूनानियों ने इसे **'अमित्रचेट्स' या 'अमित्रघात'** कहा है। जिसका अर्थ है 'शत्रुओं का नाश करने वाला'। इसका एक अन्य नाम सिंहसेन भी था।
- बिंदुसार के समय में तक्षशिला में हुए विद्रोह को दबाने के लिए मालवा या उज्जैन के प्रशासक अशोक को भेजा गया था।
- सीरिया के शासक एण्टियोकस प्रथम ने **'डायमेकस'** नामक राजदूत तथा मिस्र के शासक टॉलमी द्वितीय फिलाडेल्फस ने **'डायनोसियस'** नामक राजदूत बिन्दुसार के दरबार में भेजे बिंदुसार अपने पिता की भांति प्रशासन का कार्य करता था, उसने अपने साम्राज्य को प्रांतों में विभाजित किया तथा प्रत्येक प्रांत में उपराजा के रूप में कुमार नियुक्त किए गये।
- प्रशासनिक कार्यों के लिए उसने मंत्रिपरिषद् की स्थापना की तथा अनेक महामात्रों की नियुक्ति भी की।
- बिंदुसार ने 25 वर्षों तक राज्य किया तथा 273 ई.पू. में उसकी मृत्यु हो गई।

अशोक (273 ई.पू. -232 ई.पू.)

- बिन्दुसार का उत्तराधिकारी अशोक महान हुआ, जो 269 ई. पू. में मगध की गद्दी पर आसीन हुआ। सिंहली साहित्य के अनुसार अशोक अपने 99 भाइयों की हत्या कर सम्राट बना लेकिन इस विषय पर मतभेद है।
- अशोक का अपने भाइयों के साथ अवश्य रूप से संघर्ष हुआ, जो 4 वर्षों तक चला, क्योंकि अशोक 273 ई.पू. में शासक नियुक्त हुआ और 4 वर्ष बाद 269 ई. पू. में उसका राज्याभिषेक हुआ।
- शासक बनने से पूर्व अशोक नेपाली साहित्य के अनुसार तक्षशिला का गर्वनर था जबकि श्रीलंका के साहित्य के अनुसार वह उज्जैन का गर्वनर था।
- अशोक को प्रारंभ में 'चंडाशोक' या 'कालाशोक' कहा गया है।
- अशोक नाम का उल्लेख उसके चार अभिलेखों मास्की, गुर्जरा, नेत्तूर और उडेगोलम में मिलता है।
- भानू अभिलेख में उसे 'प्रियदर्शी, जबकि मास्की में 'बुद्ध शाक्य कहा गया है।
- अशोक ने अपने जीवन में एकमात्र कलिंग युद्ध लड़ा, जिसकी जानकारी 13वें वृहत् शिलालेख से मिलती है। यह युद्ध शासन के 8वें वर्ष 261 ई.पू. में लड़ा गया।
- इस युद्ध की विभीषिका ने अशोक के हृदय को परिवर्तित कर दिया।
- कल्हण की 'राजतरंगिणी' के अनुसार अशोक बौद्ध धर्म ग्रहण करने से पहले कट्टर शैव था ।
- बौद्ध धर्म में अशोक को दीक्षित करने वाला विद्वान उपगुप्त या मोग्गलिपुत्र तिस्स था ।
- **अशोक ने अपने साम्राज्य को 5 प्रांतों में बाँटा था, जो निम्न थे -**
  - **सम्पूर्ण मौर्य राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र** में ही स्थित थी।
  - अशोक ने कश्मीर में श्रीनगर एवं नेपाल में ललितपाटन नामक नगरों की स्थापना की।
  - रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार, इस क्षेत्र में उर्जयंत पर्वत पर पुष्यगुप्त द्वारा चंद्रगुप्त मौर्य ने सुदर्शन झील का निर्माण कराया था।
  - जिसकी मरम्मत अशोक ने तुशास्प द्वारा रुद्रदामन ने सुविशाख द्वारा तथा स्कंदगुप्त ने चक्रपालित द्वारा कराई थी । तुशास्प अशोक के समय अवन्ति का गर्वनर था, जो एक यूनानी था।
- अशोक के बाद मौर्य साम्राज्य कई भागों में बंट गया ।
  जैसे- पूर्वी भाग अर्थात् बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि।
- इस क्षेत्र का शासक दशरथ बना, जिसने इनकी राजधानी पाटलिपुत्र को ही रखा।
- पश्चिमी क्षेत्र, जिसमें राजस्थान, गुजरात और पश्चिमी मध्य प्रदेश प्रांत थे, जिसका शासक अशोक का एक अन्य पौत्र सम्प्रति बना।
- अशोक के बाद सम्प्रति को मौर्य वंश का श्रेष्ठ शासक कहा जाता है। 'राजतरंगिणी' के अनुसार कश्मीर क्षेत्र का शासक जालौक बना।
- मौर्य वंश के अंतिम शासक वृहद्रथ की हत्या 185 ई.पू. में उसके ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा कर दी गई तथा शुंग वंश की स्थापना की गई।

मौर्योत्तर काल

- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद भारत में विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति उभरकर सामने आयी।
- अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग वंशों ने राज्य स्थापित किया और इन सभी वंशों ने किसी-न-किसी रूप में मगध एवं बिहार के इतिहास को प्रभावित किया है।
- मगध एवं बिहार क्षेत्र में शुंग एवं कण्व वंश ने शासन स्थापित किया।

शुंग वंश(185-73 ईसा पूर्व)

- शुंग वंश की स्थापना 185 ई.पू. में पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य वंश के अंतिम शासक वृहद्रथ की हत्या कर की।
- शुंग वंश की जानकारी हमें **धनदेव के 'अयोध्या लेख'**, बेसनगर (विदिशा मध्य प्रदेश) के 'गरुड़ स्तम्भ लेख', कालिदास के 'मालविकाग्निमित्रम्' एवं पतंजलि के 'महाभाष्य' से मिलती है।
- पुष्यमित्र शुंग ने मगध साम्राज्य पर अपना अधिकार जमाकर जहाँ एक ओर यवनों के आक्रमण से देश की रक्षा की, वहीं दूसरी ओर देश में शांति व्यवस्था की स्थापना कर वैदिक धर्म एवं आदर्शों को पुनः प्रतिष्ठापित किया।
- इसी कारण उसका काल वैदिक प्रतिक्रिया अथवा वैदिक पुनर्जागरण का काल कहलाता है।
- पुष्यमित्र शुंग ने विदर्भ एवं यवनों के साथ युद्ध किया, जिसमें उसे विजय प्राप्त हुई।
- पुष्यमित्र शुंग की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अग्निमित्र शुंग वंश का राजा हुआ। उसने कुल 8 वर्षों तक (140 ई.पू.) तक शासन किया।
- वही कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्रम' का नायक है।
- शुंग वंश का अंतिम शासक देवभूति था, जिसकी हत्या वसुमित्र ने कर दी थी।
- शुंग वंश का साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में बरार तक तथा पश्चिम में पंजाब से लेकर पूर्व में मगध तक फैला हुआ था। साम्राज्य की **राजधानी पाटलिपुत्र** थी।
- पुष्यमित्र शुंग ने 84 हजार बौद्ध स्तूपों को नष्ट कर दिया था, लेकिन साँची भरहुत एवं **बोधगया के बौद्ध स्तूपों** को और भव्य बनवाया था।
- बोधगया के विशाल मंदिर के चारों ओर एक छोटी पाषाणवेदिका मिली है, जिसका निर्माण शुंग काल में हुआ था।

कण्व वंश (72 ई.पू.-27 ई.पू.)

- शुंग वंश के अंतिम राजा देवभूति की हत्या कर उसके अमात्य वसुमित्र ने एक नये वंश कण्व राजवंश की स्थापना की। ये शुंगों के समान ही ब्राह्मण थे।
- वसुमित्र ने कुल 9 वर्षों तक शासन किया तथा उसके बाद भूमिमित्र नारायण और सुशर्मा ने शासन किया।
- सुशर्मा इस वंश का आखिरी शासक था, जिसकी हत्या आन्ध्रजातीय भृत्य सिमुक द्वारा कर दी गई।
- सुशर्मा की मृत्यु के साथ ही कण्व राजवंश का अंत हो गया।

कुषाण वंश (पहली शताब्दी ई.पू.)

- कुषाण वंश की स्थापना कुजुल कडफिसस द्वारा की गई थी, लेकिन इस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक कनिष्क था, जो 75 ई. में शासक बना था।
- कनिष्क ने अपनी राजधानी कनिष्कपुर (कश्मीर) अथवा पुरुषपुर में स्थापित की थी।
- कनिष्क ने अपने साम्राज्य विस्तार के क्रम में मगध तक के क्षेत्र को जीत लिया था तथा प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान अश्वघोष को पाटलिपुत्र से अपनी राजधानी पुरुषपुर ले गया था।
- अश्वघोष ने ही कनिष्क द्वारा आयोजित चतुर्थ बौद्ध संगीति की अध्यक्षता की थी।
- कुषाणकालीन पुरातात्विक अवशेष बिहार के कई स्थानों से प्राप्त हुए हैं।
- कुषाणों के पतन के बाद वैशाली के लिच्छवियों ने मगध पर शासन किया, लेकिन इतिहासकार इस मत से सहमत नहीं हैं।
- कुछ इतिहासकारों का मानना है कि कुषाण वंश के पतन के बाद मगध क्षेत्र में शक मुरूंडी का शासन स्थापित था।

गुप्त काल

चंद्रगुप्त प्रथम (319-334 ई.)

- गुप्त वंश के वास्तविक संस्थापक।
- उनके साम्राज्य में आधुनिक बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल के कुछ हिस्से शामिल थे।
- राजधानी- पाटलिपुत्र।

समुद्रगुप्त (335-380 ई.)

- इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख (प्रयाग प्रशस्ति) में उनके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा लिच्छवि-दौहित्र कहा गया है।
- चीनी स्रोतों के अनुसार, समुद्रगुप्त ने सीलोन के राजा मेघवर्मन को बोधगया में एक मठ बनाने की अनुमति दी थी।

कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई.)

- बिहार में नालंदा विश्वविद्यालय की नींव रखी।
- उसके शासन काल के अभिलेख-मंदसौर, दामोदर ताम्रपत्र अभिलेख और बिलसद अभिलेख।
- गुप्त शासकों ने नालंदा, तक्षशिला, उज्जैन, विक्रमशिला और वल्लभी में उच्च शिक्षा के केंद्रों का संरक्षण किया।
- प्रत्येक विश्वविद्यालय अध्ययन के एक विशेष क्षेत्र में विशिष्ट है।
  - तक्षशिला चिकित्सा में विशिष्ट।
  - उज्जैन ने खगोल विज्ञान पर जोर दिया।
  - नालंदा ने ज्ञान की सभी शाखाओं को संभाला।

नालंदा विश्वविद्यालय

- बिहार में राजगृह के पास स्थित।
- कुमार गुप्त प्रथम (414-445 ई.) के शासनकाल के दौरान एक बौद्ध मठ के रूप में स्थापित।
- आमतौर पर 'सही कानून का खजाना' के नाम से मशहूर शीलभद्र कभी इस विश्वविद्यालय के प्रमुख रह चुके थे।

Toppers Notes Unleash the topper in you

मगध के परवर्ती गुप्त शासक

- **6ठी शताब्दी ई.** में बिहार के कुछ भागों में परवर्ती गुप्त शासकों के शासन की जानकारी कुछ अभिलेखों से मिलती है, जिनकी प्राप्ति **गया और शाहबाद** जिलों के क्षेत्र में हुई है।
  - इस वंश का संस्थापक कृष्णगुप्त था।
- इन अभिलेखों से कुमारगुप्त तृतीय द्वारा प्रयाग तक सत्ता विस्तार करने और मौखरी शासक को पराजित करने के संबंध में जानकारी मिलती है।
- कृष्णगुप्त के उत्तराधिकारी दामोदरगुप्त को मौखरी शासक ने पराजित कर मगध के अधिकांश भाग पर अधिकार कर लिया।
- मगध क्षेत्र पर शशांक का आक्रमण हुआ, जिसने बौद्धों के धार्मिक स्थलों को बुरी तरह नष्ट किया और बोधगया में महाबोधि वृक्ष को भी क्षति पहुँचाई
- देवगुप्त ने शशांक से समझौता कर कन्नौज के मौखरी शासक गृहवर्मा को पराजित किया।
  - इस प्रकार गुप्त साम्राज्य के पतन से हर्ष के शासनकाल के पहले तक बिहार का इतिहास नितांत संघर्ष का साक्षी रहा।
- **7वीं शताब्दी ई.** के आरंभ में जब हर्षवर्द्धन ने उत्तरी भारत में साम्राज्य विस्तार किया तो बिहार के कुछ भाग उसके नियंत्रण में आ गए।
  - हर्ष की मृत्यु के बाद बिहार में पुनः अराजकता फैल गई।
- बिहार के किसी स्थानीय शासक अर्जुन ने चीनी यात्रियों को क्षति पहुँचाई, जिसके प्रतिशोध में तिब्बत और नेपाल के राजाओं ने संयुक्त रूप से बिहार पर आक्रमण किया।
- सम्भवतः कुछ समय के लिए तिब्बत की संप्रभुता भी बिहार के कुछ भागों में स्थापित हो गई। इसका अंत माधवगुप्त के पुत्र आदित्य सेन ने किया।
  - उसका राज्य मगध, उत्तर एवं पूर्वी बिहार तक विस्तृत था।
  - उसकी मृत्यु के कुछ ही समय बाद इस वंश का पतन हो गया।
- इस वंश का अंतिम शासक जीवितगुप्त द्वितीय था।
- **725 ई.** के लगभग कन्नौज के शासक यशोवर्मन ने उसकी हत्या कर इस वंश का अंत कर दिया।
  - इस समय तक पाटलिपुत्र का गौरव भी नष्ट हो चुका था।
- हर्षकालीन चीनी यात्री युआन च्वांग 635 ई. के समीप जब इस क्षेत्र में आया तो पाटलिपुत्र नगर ध्वस्त हो चुका था

बिहार का मध्यकालीन इतिहास

- मध्यकाल का प्रारंभ हर्षवर्द्धन की मृत्यु (647 ई.) के बाद से माना जाता है।

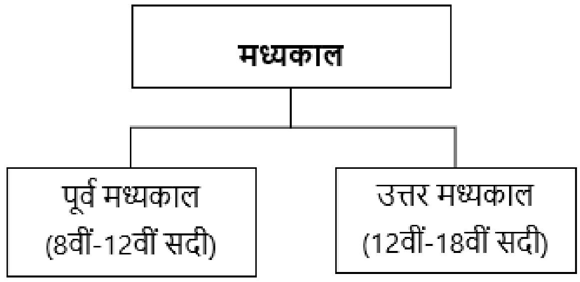

स्रोत:

साहित्यिक स्रोत

- मिनहाज उस सिराज की पुस्तक **'तबकात-ए-नासिरी'**,
- भारत में तुर्कों के आगमन का प्रारंभिक इतिहास है।
- भारत में लिखी गई फारसी भाषा की प्रथम रचना है।
- अब्दूसी अखिस्तान देहलवी की **'बसातीन उल-उन्स',**
- शेख कबीर की 'अफसाना-ए-शासन',
- अब्बास **खाँ सरवानी की 'तारीख-ए-शेर शाही'**
- शेरशाह का प्रशासन और इतिहास जानने का एकमात्र स्रोत है।
- रिजकुल्लाह की रचना 'वाकयात-ए-मुस्ताकी
- गुलाम हुसैन सलीम जैदपुरी की 'रियाज-उस-सलातीन' तथा
- गुलाम हुसैन खान की रचना 'सीयर - उल मुतखेरीन'
- विद्यापति की 'कीर्तिलता' एवं 'कीर्तिपताका'
- ज्योतिरीश्वर ठाकुर की 'वर्णरत्नाकर'
- चन्देश्वर की रचना 'राजनीति रत्नाकर'

अभिलेखीय स्रोत

- नान्यदेव (कर्णाट वंश) का सिमरांव से प्राप्त पाषाण लेख
- भगवानपुर से प्राप्त मालदेव के लेख
- बुद्ध सेन का बोधगया अभिलेख
- बिहारशरीफ का प्रस्तर अभिलेख
- संग्रामगुप्त का पंच ताम्रपत्र अभिलेख
- मुहम्मद-बिन-तुगलक का बेनीबन अभिलेख
- फिरोजशाह तुगलक का राजगीर अभिलेख
- खड़गपुर के राजा का अभिलेख
- भभुआ में शेरशाह का अभिलेख
- खैरवार प्रमुख प्रताप धवल के तीन अभिलेख

पूर्व मध्यकाल – (8वीं से 12वीं सदी)

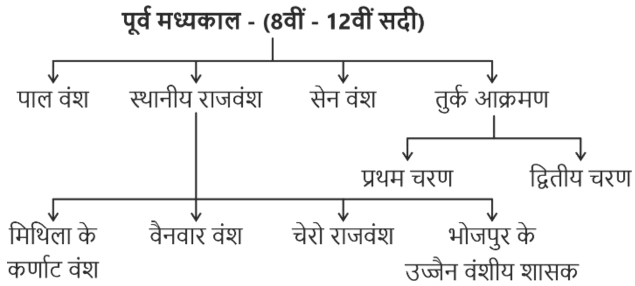

बंगाल के पाल शासक (8वीं-12वीं शताब्दी)

- पालों ने **बिहार और बंगाल में** शासन किया।
- संस्थापक - **गोपाल**- एक स्थानीय सरदार जो आठवीं शताब्दी के मध्य सत्ता में आया था।
- बौद्ध धर्म के समर्थक - **महायान और तांत्रिक विद्यालय**।
- इनके समय **कला के विशिष्ट विद्यालय का उदय** हुआ। .
- **इन्होने सोमपुरा महाविहार सहित मंदिरों और मठों का** निर्माण किया और **नालंदा एवं विक्रमशिला** के महान विश्वविद्यालयों का संरक्षण किया।

कला और वास्तुकला

- **ओदंतपुरी विहार जिसका निर्माण गोपाल द्वारा किया गया यह** उस समय के स्थापत्य कौशल का उत्कृष्ट नमूना है।
- **पहाड़पुर में सोमपुर महाविहार** का निर्माण **धर्मपाल** के समय हुआ जो कि भारतीय उपमहाद्वीप के **सबसे बड़े बौद्ध विहारों में से एक** है।
- इस काल में विभिन्न **महाविहारों**, **स्तूपों, चैत्यों, मंदिरों और किलों का निर्माण** किया गया।
- **सिक्को** में **देवता की आकृतियाँ** पाई जाती थी।
- **विक्रमशिला विश्वविद्यालय**
  - पाल राजा **धर्मपाल द्वारा** बनवाया गया।
  - इसे **बख्तियार खिलजी द्वारा नष्ट** किया गया।

> - बख्तियार खिलजी ने 1200 ई. में बिहार को अपने अधीन कर लिया।
> - उनके आक्रमणों ने ओदंतपुरी, विक्रमशिला में बौद्ध प्रतिष्ठानों को गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया और नालंदा विश्वविद्यालय को नष्ट कर दिया।
> - मिन्हाज-ए-सिराज के तबकात-ए नासिरी में बख्तियार खिलजी द्वारा बौद्ध मठ के विध्वंस का वर्णन है, जिसे लेखक अपने विवरण में एक शहर में स्थित बताता है जिसे वह "बिहार" कहता है, जिसका नाम विहार कहे जाने वाले सैनिकों से पड़ा है। **(64 वीं BPSC प्रारंभिक परीक्षा)**
> - 17वीं शताब्दी की शुरुआत में बौद्ध विद्वान तारानाथ के अनुसार, आक्रमणकारियों ने ओदंतपुरी में कई भिक्षुओं का नरसंहार किया और विक्रमशिला को नष्ट कर दिया।

  - इसमें **बौद्ध धर्म की** दोनों **शाखाओं- महायान** और **हीनयान** से संबंधित बौद्ध **पाठ्यपुस्तकों** को **पढ़ाया जाता** था।
- पालों के शासनकाल के दौरान **कला और स्थापत्य** समृद्ध हुई और **बंगाल और बिहार राज्यों** में विकास की अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की ।
- वे **बौद्ध अनुयायी** थे, जैसा कि उनके कला रूपों द्वारा प्रदर्शित किया गया था।
- 13वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा **बौद्ध मठों के विनाश** के बाद पाल कला का अचानक अंत हो गया।

वास्तुकला

- महाविहारों में **नालंदा, विक्रमशिला, सोमपुरा, त्रिकुटक, देवीकोट, पंडिता, फूलबाड़ी और जगदला विहार** उल्लेखनीय हैं।
- भिक्षुओं के लिए **नियोजित आवासीय भवन** बनाए गए।
  - धर्मपाल ने विक्रमशिला महाविहार (बिहार के भागलपुर जिले के पाथरघाट में) और बिहार में **ओदंतपुरी विहार** का निर्माण किया।
  - सोमपुरा विहार और विक्रमशिला विहार को बौद्ध जगत में 9वीं और 12वीं शताब्दी ईस्वी के बीच की अवधि में **बौद्ध शिक्षा के दो महत्वपूर्ण केंद्रों** के रूप में स्वीकार किया गया था।
  - **ओदंतपुरी महाविहार (750-770 ई.)** यह इतना शानदार था कि इसने तिब्बत में बने पहले मठ के लिए **एक मॉडल** के रूप में काम किया।
- धर्मपाल द्वारा निर्मित **पहाड़पुर में सोमपुरा महाविहार**, पाल काल में प्राप्त **स्थापत्य कला की उत्कृष्टता** को प्रदर्शित करता है।
  - यह भारतीय उपमहाद्वीप के **सबसे बड़े बौद्ध विहारों** में से एक है और इसके **केंद्रीय मंदिर** की योजना बंगाल में विकसित की गई थी।
  - विपुलश्रीमित्र के नालंदा शिलालेख में इसे **जगतं नेत्रिकाविश्रम भू (दुनिया की आँखों को भाने वाला)** के रूप में वर्णित किया गया है।
- **देवपाल** ने विद्वानों के लिए नालंदा में स्थापित मठ के रखरखाव के लिए **जावा के शैलेंद्र राजा** के अनुरोध पर **पाँच गांव** दिए।
- पाल साम्राज्य में बौद्ध विहारों ने **नेपाल, तिब्बत और श्रीलंका** के पड़ोसी देशों में बौद्ध धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- नौवीं शताब्दी से कहलगाँव (भागलपुर जिला) में **रॉक-गुफा मंदिर** दक्षिण भारतीय वास्तुकला की विशेषता वाली गुंबददार छत को दर्शाता है।
- गया जिले के कोंच में ईंट से निर्मित मध्ययुगीन शिव मंदिर अपने **घुमावदार शिखर और घुमावदार लैंसेट खिड़की** के कारण वास्तुशिल्प रूप से महत्वपूर्ण है।
- रामपाल ने **रामवती** नाम के एक शहर की स्थापना की जहाँ कई **इमारतों और मंदिरों** का निर्माण किया गया था।

पाल मंदिरों के बारे में अधिक जानकारी

- बर्धवान जिले के बराकर में नौवीं शताब्दी के **सिद्धेश्वर महादेव मंदिर** में एक बड़े आमलक सहित एक लंबा घुमावदार शिखर निर्मित किया गया है और यह **प्रारंभिक पाल शैली** का एक उदाहरण है।
- नौवीं से बारहवीं शताब्दी तक कई मंदिर **पुरुलिया जिले के तेलकुपी** में स्थित थे।
  - जब क्षेत्र में बांध बनाए गए तो वे जलमग्न हो गए थे।
- इन मंदिरों के **काले से भूरे रंग के बेसाल्ट और क्लोराइट पत्थर के खंभे और धनुषाकार निशानों ने** गौर और पांडुआ में शुरुआती बंगाल सल्तनत की इमारतों पर अत्यधिक प्रभाव डाला।

Toppersnotes Unleash the topper in you

टेराकोटा

- कला के इस रूप के तहत, दीवारों पर ऐसी मूर्तियाँ बनाई जाती हैं जो **धार्मिक और सामान्य जीवन शैली** के दृश्यों को दर्शाती हैं।
- बुद्ध काल के **सुंदर और कलात्मक** मिट्टी के चित्र मिलते हैं।
  - लकड़ी की प्लेट पर बने चित्र में **कलात्मक सौन्दर्य** का एक उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलता है; जिसमें एक महिला हाथों में दर्पण लिए मुद्रा में बैठी दिखाई देती है, और वह स्वयं को दर्पण में निहारती है।
- पहाड़पुर से प्राप्त **टेराकोटा पट्टिकाएँ** पाल काल में **कला की उत्कृष्टता** को प्रदर्शित करती हैं।

मूर्तिकला

- इसे '**मूर्तिकला कला की पाल शैली**' के रूप में जाना जाता है।
- यह मध्यकालीन मूर्तिकला की **पूर्वी शैली** है।
- **नालंदा, बिहारशरीफ, राजगीर, बोधगया, घोसरांवां** आदि के मठ स्थलों में बड़ी संख्या में **पाषाण और कांस्य की मूर्तियों** का निर्माण किया गया था।
- **बुद्ध** के अलावा, **विष्णु, बलराम, उमा, महेश्वर, सूर्य और गणेश** जैसे हिंदू धर्म के भगवान और देवी की मूर्तियों का भी निर्माण किया गया था।
- इस स्कूल की बेहतरीन मूर्तियों में **एक महिला की मूर्ति, नालंदा के दो खड़े अवलोकितेश्वर चित्र** शामिल हैं। बुद्ध '**भूमिस्पर्शसमुद्र**' में विराजमान हैं और '**अर्ध पर्यंक**' में विराजमान अवलोकितेश्वर के चित्र आदि।
- बौद्ध मूर्तियों की **एक प्रमुख विशेषता** विस्तृत रूप से नक्काशीदार शेरोन के आधार वाला ब्लैक-स्लैब और कमल-आसन है।
- शैव प्रतीकों के विभिन्न रूपों में से **महेश्वर (तांत्रिकवाद से प्रेरित)** गणेश से भी अधिक लोकप्रिय थे।
- 11वीं और 12वीं शताब्दी के दौरान **वैष्णव मूर्तियाँ** भी बनाई गई थी।
- आम तौर पर मूर्तियों में शरीर के केवल **अग्र भागों** को दिखाया गया है, जिन्हें **अत्यधिक विस्तृत और सजावटी** बनाया गया था।
- **तंत्रवाद** के प्रभाव के कारण, भगवान की मूर्तियों को अलग-अलग रूप दिए गए जैसे कि **महिला, पशु आदि।**
- **कांस्य मूर्तियों** को रंगा भी जाता हैं।
  - ऐसी मूर्तियाँ **नालंदा और कुक्रिहार (गया के पास)** से मिली हैं।
  - धातु की ढलाई की कला ने **कुक्रिहार के बौद्ध केंद्र और नालंदा विश्वविद्यालय** में उच्च स्तर की प्रवीणता प्राप्त की।
  - कांसे की सबसे बड़ी मूर्तियाँ **सुल्तानगंज (भागलपुर)** में मिली हैं जिसे **बर्मिंघम संग्रहालय** में रखा गया है।
  - कांसे की मूर्तियाँ आमतौर पर **लुप्त मोम तकनीक** द्वारा बनाई जाती थी।
- तारानाथ ने दो कलाकारों, पिता और पुत्र, **धीमन और बीठपाल** को मूर्तिकला और चित्रकला की **कास्ट मेटल शैली के संस्थापक** के रूप में नामित किया।
- वे **नालंदा** के निवासी थे और **पाल राजाओं धर्मपाल और देवपाल** के अधीन काम करते थे।
- पाल की मूर्तियाँ भी पत्थर की मूर्तियों से तराशी गई **कलात्मक सुंदरता** के उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।
  - ये **"काले बेसाल्ट पत्थरों"** से बने होते हैं जो **संथाल परगना और मुंगेर** से प्राप्त होते हैं।
  - उनके पास **सुरूप लालित्य, तकनीकी सटीकता और धातु के काम के लिए एक कठोर रूपरेखा** थी।

चित्रकला

- भारत में लघु चित्रकला के शुरुआती उदाहरण पूर्वी भारत के पालों के तहत निष्पादित बौद्ध धर्म पर धार्मिक ग्रंथों और 11 वीं -12 वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान पश्चिमी भारत में निष्पादित जैन ग्रंथों के चित्रण के रूप में मौजूद हैं।
- **पांडुलिपियाँ**
  - तारानाथ (1608) में धर्मपाल और देवपाल के शासनकाल के दौरान धीमन और उनके पुत्र बीठपाल, **मूर्तिकार और चित्रकार विशेषज्ञ** के नामों का उल्लेख है।
  - **नालंदा, ओदंतपुरी, विक्रमशिला और सोमपुरा** जैसे बौद्ध केंद्रों में बौद्ध विषयों से संबंधित ताड़-पत्ते पर बड़ी संख्या में पांडुलिपियों को बौद्ध देवताओं की छवियों के साथ लिखा और चित्रित किया गया था।
  - चित्रित पांडुलिपियाँ वर्तमान में **कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय** में संग्रहित हैं।
  - पाल शैली में चित्रित **विशिष्ट बौद्ध हस्तरेखा-सीसा पांडुलिपियों** का एक अच्छा उदाहरण **बोडलियन पुस्तकालय, ऑक्सफोर्ड, इंग्लैंड** में मौजूद है।
  - यह **अष्ट-सहसारिका प्रज्ञापारमिता** की पांडुलिपि है, या आठ हजार पंक्तियों में लिखी गई **प्रज्ञा की पूर्णता** है।
  - इसे **नालंदा के मठ में, पाल राजा, रामपाल** के शासनकाल के 15वें वर्ष में 11वीं शताब्दी के अंतिम तिमाही में निष्पादित किया गया था। पांडुलिपि में छह पृष्ठों के चित्र हैं और दोनों लकड़ी के आवरणों के अंदर भी हैं।
- **भित्ति चित्रण**
  - **महाविहार, चैत्य, मंदिरों** और अन्य संरचनाओं की दीवारों पर **भित्ति चित्रों** को भी चित्रित किया गया था।
  - इन चित्रों में **जानवरों, मनुष्यों, फूलों, पक्षियों और पेड़ों** जैसी विभिन्न आकृतियों को चित्रित किया गया था।
  - पाल शैली प्राकृतिक है, जो **समकालीन कांस्य और पत्थर की मूर्तिकला** के आदर्श आकार को उजागर करती है।

Toppers Notes Unleash the topper in you